नवतत्त्व प्रकरण.

गाथा मूल सलग थीलाइन पैका टाइपथी
गाथाओना जुदा शब्दोना अर्थ, गाथा
मूल, शब्दार्थ भेगो तथा विस्तारार्थ
तथा नवतत्त्वना जुदा बोल

आवृत्ति बीजी.

छपावी प्रसिद्ध करनार,
श्री आद्य जैन धर्म प्रवर्तक सभा
पांजरापोल अमदावाद

अमदावाद–लक्ष्मी प्रिन्टींग प्रेसमा
शा मणीलाल छगनचदे छाप्यु

संवत १९६८ सने १९११

किमत आठ आना.

।अथ श्रीनवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः।

जीवाऽजीवा पुण्णं,
पावाऽसव संवरो य निज्जरणा।
बंधो मुक्खो य तहा,
नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बाया,
लीसा बासीय हुंति बायाला ॥
सत्तावन्नं बारस,
चउ नव भेया कमेणोसिं ॥२॥
एगविह दुविह तिविहा,
चउव्विहा पंच छव्विहा जीवा ॥

चेयण तस इयरेहिं,
चेय गई करण काएहिं ॥ ३
एगिंदिय सुहमियरा,
सन्नियर पणिंदियायस बिति
अपजत्ता पज्जत्ता,
कमेण चउदस जियट्ठाणा ॥
नाणं च दंसणं चेव,
चरित्तं च तवो तहा ॥
वीरियं उवओगो य,
एयं जीवस्स लक्खणं ॥ ५
आहार सरीरइंदिय,
पज्जत्ती आण पाण भास मणे

ाउ पंच पंच छप्पिय,
ग विगला सन्नि सन्नीणं ॥६॥
ाणिंदिय त्तिबलूसा,
ाऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ
ग दु ति चउरिंदीणं,
असन्नि सन्नीण नव दस य ॥७॥
॥ इति जीवतत्त्वम् ॥
धम्मा ऽधम्मा ऽगासा,
तिय तिय भेया तहेव अद्धाय॥
खंधा देस पएसा,
परमाणु अजीव चउदसहा ॥८॥
धम्माऽधम्मा पुग्गल,

नह कालो पंच हुंति अज्जीवा
चलणसहावो धम्मो,
थिरसंठाणो अहम्मो य ॥ ९
अवगाहो आगासं,
पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा
खंधा देस पएसा,
परमाणू चेव नायव्वा ॥ १० ॥
सद्दंधयार उज्जोय,
पभा छाया तवेहि आ ॥
वण्ण गंध रसा फासा,
पुग्गलाणं तु लख्खणं ॥ ११ ॥
एगाकोडि सतसट्ठि,

लक्खा सत्तहुत्तरी सहस्सा य ॥
दोयसया सोलहिया,
आवलिया इगमुहुत्तम्मि ॥१२॥
समयाऽवली मुहुत्ता,
दीहा पक्खा य मास वरिसा य ॥
भणिओ पलिआ सागर,
उस्सप्पिणीसप्पिणी कालो॥१३
परिणामि जीव मुत्ता,
सपएसा एग खित्त किरिआय।
निच्चं कारण कत्ता,
सव्वगय मियर अप्पवेसे ॥१४॥
॥ इत्यजीवतत्त्वम् ॥

सा उच्चगोय मणु दुग,
सुर दुग पंचिंदिजाइ पणदेहा ॥
आइ ति तणू णुवंगा,
आइम संघयण संठाणा ॥१५॥
वण्णचउक्का गुरु लहु,
परघा ऊसास आय वुज्जोयं ॥
सुभखगइ निमिण तस दस,
सुर नर तिरियाउ तित्थयरं॥१६॥
तस बायर पज्जत्तं,
पत्तेयथिरं सुभं च सुभगं च ॥
सुस्सर आइज्ज जसं,
तसाइ दसगं इमं होइ ॥ १७ ॥

॥ इति पुण्यतत्त्वम् ॥

नाणंतराय दसगं,
नवबीये नीय साय मिच्छत्तं ॥
थावर दसनिरयातिगं,
कसाय पणवीसातिरियदुगं॥१८॥
इग बि ति चउ जाइओ,
कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥
अपसत्थं वण्ण चऊ,
अपढम संघयण संठाणा ॥१९॥
थावर सुहुम अपज्जं,
साहारण मथिर मसुभदुभगाणि
दुस्सर णाइज्ज जसं,

थावरदसगं विवज्जत्थं ॥२०॥
॥ इति पापतत्त्वम् ॥
इंदिअ कसाय अव्वय,
जोगा पंच चउ पंच तिन्निकमा॥
किरिआओ पणवीसं,
इमाउ ताओ अणुक्कमसो ॥२१॥
काइय अहिगरणीआ,
पाउसिआ पारितावणी किरिया॥
पाणाइवायारंभिअ,
परिग्गहिया मायवत्तीअ ॥२२॥
मिच्छा दंसण वत्ती,
अपच्चखाणाय दिट्ठि पुट्ठिअ ॥

पाडुच्चिअ सामंतो,
वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥२३॥
आणवणि विआरणिआ,
अणभोगाअणवकंखपच्चइआ
अन्नापओग समुदा,
ण पिज्ज दोसे रिआवहिआ ॥२४॥
॥ इत्याश्रवत-त्वम् ॥
समिई गुत्ति परीसह,
जइधम्मो भावणा चरित्ताणि ॥
पण ति दुवीस दस बार,
स पंचभेएहिं सगवन्ना ॥ २५ ॥
इरिया भासे सणा दाणे,

उच्चारे समिई सुअ ॥
मणगुत्ति वयगुत्ति,
कायगुत्ति तहेव य ॥ २६ ॥
खुहा पिवासा सी उण्हं,
दंसा चेला रइ त्थिओ ॥
चरिआ निसिहिया सिज्जा,
अक्कोस वह जायणा ॥२७॥
अलाभ रोग तण फासा,
मल सक्कार परीसहा ॥
पन्नाअन्नाण सम्मत्तं,
इअ बावीस परीसहा ॥२८॥
खंती मद्दव अज्जव,

मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे ॥
सच्चं सोअं आकिं,
चणं च बंभं च जइधम्मो ॥२९॥
पढम माणिच्च मसरणं,
संसारो एगया य अन्नत्तं ॥
असुइत्तं आसव सं,
वरो अ तह निज्जरा नवमी ॥३०॥
लोगसहावो बोही,
दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा॥
एआओ भावणाओ,
भावे अव्वा पयत्तेणं ॥३१॥
सामाइ अत्थ पढमं,

उच्चारे समिई सुअ ॥
मणगुत्ति वयगुत्ति,
कायगुत्ति तहेव य ॥ २६ ॥
खुहा पिवासा सी उण्हं,
दंसा चेला रइ त्थिओ ॥
चरिआ निसिहिया सिज्जा,
अक्कोस वह जायणा ॥२७॥
अलाभ रोग तण फासा,
मल सक्कार परीसहा ॥
पन्नाअन्नाण सम्मत्तं,
इअ बावीस परीसहा ॥२८॥
खंती मद्दव अज्जव,

मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे ॥
सच्चं सोअं आकिं,
चणं च बंभं च जइधम्मो ॥२९॥
पढम माणिच्च मसरणं,
संसारो एगया य अन्नत्तं ॥
असुइत्तं आसव सं,
वरो अ तह निज्जारा नवमी ॥३०॥
लोगसहावो बोही,
दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा॥
एआओ भावणाओ,
भावे अव्वा पयत्तेणं ॥३१॥
सामाइ अत्थ पढमं,

छेओवट्ठावणं भवेबीअं ॥
परिहारविसुद्धीयं,
सुहुमं तह संपरायं च ॥३२॥
तत्तोअ अहख्खायं,
खायं सव्वम्मि जीवलोगम्मि ॥
जं चरिऊण सुविहिआ.
वच्चंति अयरामरं ठाणं ॥३३॥
॥ इति संवरतत्त्वं ॥
अणसण मूणोयरिआ,
वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ॥
काय किलेसो संली,
णआयबज्झातवो होइ ॥३४॥

पायच्छित्तं विणओ,
वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ॥
झाणं उस्सग्गो विअ,
अब्भिंतरओ तवो होई ॥३५॥
बारसविहं तवो नि,
ज्जराय बंधो चउविगप्पो अ ॥
पयई ठिइ अणुभाग,
पएस भेएहिं नायव्वो ॥३६॥
॥ इति निर्ज्जरातत्त्वम् ॥
पयइ सहावोवुत्तो,
ठिई कालावहारणं ॥
अणुभागो रसो नेओ

पएसो दलसंचओ ॥ ३७ ॥
पड पडिहार सि मज्ज,
हडचित्तकुलाल भंडगारीणं ॥
जह ए एसिंभावा,
कम्माणविज्जाण तह भावा ।३८।
इह नाण दंसणावर,
ण वेय मोहाउ नाम गोआणि॥
विग्घं च पण नव दु अ,
डवीस चउतिसय दुपणविहं ।३९।
नाणे य दंसणावरणे,
वेअणिए चेव अंतराएअ, ॥
तीसं कोडाकोडी,

अयराणं ठिईय उक्कोसा ॥४०॥
सित्तरि कोडाकोडी,
मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥
तित्तीसं अयराइं,
आउट्ठिइ बंध उक्कोसा ॥४१॥
बारस मुहुत्त जहन्ना,
वेयणिए अठ नाम गोएसु ॥
सेसाणंतमुहुत्तं,
एयं बंध ठिई माणं ॥ ४२ ॥
॥इति बंधतत्त्वं ॥
संतपय परूवणया,
दुव्वपमाणं च खित्तफुसणाय ॥

काळो अ अंतरं भाग,
भावेअप्पा बहु चेव ॥ ४३ ॥
संत्तं सुद्ध पयत्ता,
विज्जंत्तं खकुसुमं व न असंतं ॥
मुख्खत्ति पयं तस्सउ,
परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥
गइ इंदीए काये,
जोए वेए कसाय नाणे य ॥
संजम दंसण लेसा,
भव सम्मे सन्नि आहारे ॥४५ ॥
नरगइ पणिंदि तसभव,
सन्निअहख्खाय खइअसम्मत्ते ॥

मुरव्खोणाहार केवल,
दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥
दव्वपमाणे सिद्धा,
णं जीव दव्वाणि हुंति णंताणि ॥
लोगस्स असंखिज्जो,
भागे इक्को य सव्वे वि ॥ ४७ ॥
फुसणा अहिआ कालो,
इगसिद्ध पडुच्च साइओणंतो ॥
पडिवाया भावाओ,
सिद्धाणं अंतरं नत्थि ॥ ४८ ॥
सव्व जियाण मणंते,
भागे तेतेसिं दंसणं नाणं ॥

खइए भावे परिणा,
मि एअ पुण होइ जीवत्तं॥४९॥
थोवा नपुंस सिद्धा,
थी नर सिद्धा कमेण संखगुणा॥
इअ मुक्ख तत्तमेअं,
नव तत्ता लेसओ भणिआ॥५०॥
जीवाइ नव पयत्थे,
जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं॥
भावेण सद्दहंतो,
अयाणमाणेवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥
सव्वाइं जिणेसर भा,
सिआइं वयणाइं नन्नहा हुंति ॥

इअ बुद्धी जस्स मणे,
सम्मत्तं निच्चलं तस्स ॥ ५२ ॥
अंतो मुहुत्त मित्तं,
पि फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं॥
तेसिं अवड्ढपुग्गल,
परिअट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥
उस्सप्पिणी अणंता,
पुग्गल परिअट्टओ मुणेअव्वो ॥
तेणंताती अद्धा,
अणागयद्धा अणंतगुणा ॥५४॥
जिण अजिण तित्थ नित्था,
गिहिअन्नसलिंगथी नर नपुंसा ॥

पत्तेअ सयंबुद्धा,
बुद्धबोहि कणिकाय ॥५५॥
जिणसिद्धा अरिहंता,
अजिण सिद्धा य पुंडरिया पमुहा
गणहारि तित्थसिद्धा,
अतित्थासिद्धा य मरुदेवी॥ ५६ ॥
गिहिलिंग सिद्ध भरहो,
वलकलचीरीय अन्न लिंगम्मि ॥
साहू सलिंग सिद्धा,
थी सिद्धा चंदणा पमुहा ॥५७॥
पुं सिद्धा गोयमाई,
गांगेयाई नपुंसया सिद्धा ॥

पत्तेय सयंबुद्धा,
भणिया करकंडु कविलाई ॥५८॥
तह बुद्धबोहिगुरुबो,
हिया इग समय एग सिद्धा य ॥
इग समएवि अणेगा,
सिद्धा ते णेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥
जइआइ होइ पुच्छा,
जिणाण मग्गंमि उत्तरं तइया ॥
इक्कस निग्गोयस्स,
अणंत भागो य सिद्धिगओ॥६०॥
इति मोक्षतत्त्वं ॥
इति श्री नवतत्त्वं समाप्तं ॥

॥ अथ नवतत्त्व प्रकरण. ॥

गाथा १ लीना छूटा शब्दना अर्थ.

जीवा=जीवतत्त्व.	बंधो=बंधतत्त्व
अजीवा=अजीवतत्त्व.	मुक्खो=मोक्षतत्त्व
पुण्ण=पुन्यतत्त्व	तहा=तमज.
पाव=पापतत्त्व	नवतत्ता=नवतत्त्वो.
आसव=आश्रवतत्त्व	हुंति=छे
संवरो=संवरतत्त्व	नायव्वा=जाणवा योग्य
निज्जरणा=निर्जरातत्त्व	

जीवाऽजीवा पुण्णं, पावाऽसव संवरोय निज्जर-
णा ॥ बंधो मुक्खो य तहा, नवतत्ता हुंति ना-
यव्वा ॥ १ ॥

शब्दार्थः-जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव संवर अने नि-
र्जरा वली बंध तेमज मोक्ष ए नवतत्त्वो जाणवा योग्य छे. ॥

विस्तारार्थ.-व्यवहारनये करी जे शुभाशुभ कर्मोनो
कर्त्ता, हर्त्ता तथा भोक्ता छे, अने निश्चय नये करी

ज्ञान, दर्शन, तथा चारित्ररूप निज गुणोनोज कर्त्ता तथा भोक्ता छे, अथवा दु ख सुख ज्ञानोपयोग लक्षणवंत चेतना सहित होय, तथा प्राण धारण करे, तेने प्रथम (जीवा) जीवतत्त्व कहिये तेथी विपरीत जे चेतना रहित जड स्वभाववालो होय तेने बीजु (अजीवा) अजीवतत्त्व कहिये जेणे करी शुभ कर्मोना पुद्गलोनो सचय थवाथी सुख उत्पन्न थाय छे तेने त्रीजु (पुण्ण) पुण्यतत्त्व कहिये तेथी विपरीत जेणे करी अशुभ कर्मोना पुद्गलोनो सचय थवाथी दु ख उत्पन्न थाय छे, तेने चोथु (पावा) पापतत्त्व कहिये जेणे करी नवा कर्म बधाय तेने (आसव) आश्रवतत्त्व कहिये, जेथी आवता कर्म रोकाय तेने पाचमु (सवरो) सवरतत्त्व कहिये, जेथी देश थकी कर्मोनो क्षय थाय छे तेने (निज्जरणा) निर्जरा तत्त्व कहीये, नवा कर्मोनी साथे जुना कर्मोनु मलो जवुं तेने (बधो) बधतत्त्व कहिये, अने जे आत्म प्रदेशथकी सर्वथा कर्मोनो क्षय थवो तेने (मुक्खो)

मोक्षतत्व कहिये, जेम ए नवतत्व सिद्धांतोने विषे, कहेला छे (तहा) तेमज सम्कितदृष्टि जीवोने आ (नवतत्ता) नवतत्वो (नायव्वा) जाणवा योग्य (हुंति) छे. आ नवतत्वोमां जीव अने अजीव ए बे तत्व मात्र जाणवा योग्य छे, पुण्य, संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए चार तत्व ग्रहण करवा योग्य छे; अने पाप, आश्रव ने बंध ए त्रण तत्व तो मात्र सर्वथा सर्वने त्याग करवा योग्यज छे ॥ १ ॥

गाथा २ जीना छूटा शब्दना अर्थ

चउदस=चौद	चउ=चार
बायालीसा=बेंतालीस.	नव=नव.
बासी=ब्यासी.	कमेणेसिं=अनुक्रमे करी.
बायाला=बेंतालीस	भेआ=भेदो
सत्तावन्न=सत्तावन.	हुंति=थाय छे.
बारस=बार	

चउदस चउदस बाया, लीसा बासीअ हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारसं, चउ नव भेआ कमेणेसिं ॥ २ ॥

शब्दार्थ –पहेला तत्त्वना चौद, बीजाना चौद, त्रीजाना बेंतालीस, चोथाना ब्यासी, अने पांचमाना बेंतालीस, छठाना सत्तावन, सातमाना बार, आठमाना चार अने नवमाना नव एवा अनुक्रमे करीने भेदो थाय छे ॥ २ ॥

विस्तारार्थ –प्रथम जीवतत्त्वना(चउदस) चौद, बीजा अजीव तत्त्वना (चउदस)चौद, त्रीजा पुण्यतत्त्वना (बायालीसा) बेतालीस, चोथापापतत्त्वना (बासी) ब्यासी,पांचमा आश्रवतत्त्वना (बायाला) बेंतालीस, छठा संवरतत्त्वना (सत्तावन्ना) सत्तावन, सातमा निर्जरातत्त्वना (बारस) बार, आठमा बंधतत्त्वना (चउ) चार, अने नवमा मोक्षतत्त्वना (नव) नव एवी रीते नवेना (कमेणेसि) अनुक्रमे करी (भेआ) भेद (हुंति) थाय छे आ प्रमाणे सर्व मली नवतत्त्वना भेदनी संख्या बसेंने छोंतेर थाय छे तेउमां अठ्यासी भेद अरूपी छे अने एकसो अठयासी भेद रूपी छे ॥ २ ॥

आ नव तत्वोना भेदनो कोठो.

अंक	नाम	रुपिभेद.	अरुपिभेद.	हेय ज्ञेयादि.
१	जीव	१४	०	ज्ञेय.
२	अजीव	४	१०	ज्ञेय.
३	पुण्य	४२	०	उपादेय.
४	पाप	८२	०	हेय
५	आश्रव.	४२	०	हेय.
६	संवर.	०	५७	उपादेय.
७	निर्जरा	०	१२	उपादेय.
८	बंध	४	०	हेय,
९	मोक्ष	०	९	उपादेय.

गाथा २ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

एगविह=एक विध
दुविह=द्विविध
तिविहा=त्रिविध.
चउव्विहा=चतुर्विध.
पंच=पंच (विध)
छव्विहा=षड्विध
जीवा=जीवतत्त्व

चयण=चेतना
तस=त्रस
इयरेहिं=इतर (स्थावर)
वेय=वेद.
गइ=गति.
करण=इंद्रियो.
काएहिं=काये करीने

एगविह डुविह तिविहा, चउव्विहा पंच छवि-
हा जीवा ॥ चेयण तस इयरेहिं, वेय गई क-
रण काएहिं ॥ ३ ॥

शब्दार्थ–चेतना, त्रस अने स्थावर ए भेदोए करीने, वली त्रण वेद, चार गति, पांच इंद्रिय अने छ काये करीने जीवो, एक प्रकारना, बे प्रकारना, त्रण प्रकारना, चार प्रकारना, पांच प्रकारना, अने छ प्रकारना जाणवा. ॥ ३ ॥

विस्तारार्थ –(एगविह) एकविध, (दुविह) द्विविध, (तिविहा) त्रिविध, (चउव्विहा) चतुर्विध, (पंच) पंचविध, (छव्विहा) षड्विध एटले छ प्रकारे (जीवा) जीवतत्त्व छे सर्व जीवने श्रुतज्ञाननो अनंतमो भाग उघाडो रहेवाथी तेउ (चेयण) चेतना लक्षणवान छे माटे एकविध जाणवु (तस) त्रस एटले जेनामां हालवा चालवानी शक्ति छे, अने (इयरेहिं) इतर एटले (स्थावर) एटले जे स्थिरतावान होय ते एम सर्व जीव द्विविध जाणवा (वेय) वेद त्रण छे स्त्रिवेद, पुरुषवेद अने नपुंसकवेद एम सर्व जीव त्रिविध जाणवा (गइ)

गति चार छे देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति अने नरकगति एम सर्व जीव चतुर्विध जाणवा (करण) इंद्रियो पांच छे एकेंद्रि, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चउरिंद्रि अने पंचिंद्रि एम सर्व जीव पंचविध जाणवा अने (काएहिं) काय ठ छे–पृथ्विकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय वनस्पतिकाय अने त्रसकाय. एम सर्व जीव षड्विध जाणवा ॥ ३ ॥

गाथा ४ थीना छूटा शब्दना अर्थ

एगिंदिय=एकेंद्रि
सुहुम=सूक्ष्म
इयरा=इतर (बादर)
सन्नि=सञ्ज्ञि
इयर=इतर (असञ्ज्ञि)
पणिंदिया=पंचिंडिय.
स=सहित. साथे
बि=बेइंडि
ति=तेइंडि
चउ=चउरिंडि.
अपजत्ता=अपर्याप्ता
पजत्ता=पर्याप्ता.
कमेण=अनुक्रमे.
चउदस=चौद
जियठाणा=जीवना स्थानक

एगिंदिय सुहुमियरा, सन्नियर पणिंदिआय स बि ति चउ ॥ अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउदस जियठाणा ॥ ४ ॥

शब्दार्थः–सूक्ष्म अने बादर एवा एकेंद्रिय. बादर बेइंद्रिय, तेइं-
द्रिय अने चउरिंद्रिय, सन्नी अने असन्नी पंचेंद्रिय ए सात भेद
पर्याप्ता अने अपर्याप्ता जेथी अनुक्रमे जीवना चौद भेद होय.
विस्तारार्थ –(एगिंदिय) एकेंद्रिना (सुहुम) सुक्ष्म अने (इयरा) इतर एटले बादर एवा बे भेद छे तेमा सुक्ष्म एटले जे चौद राजलोकमा व्यापी रह्या छे, पर्वत प्रमुखने भेदीने जाय आवे कोइ वस्तुथी छेदाय भेदाय नहि, अग्नि जेने बाळी शके नहि, चर्मदृष्टिए देखाय नहि, मनुष्यादिक कोइ प्राणीना उपयोगमा आवे नहि एवा अदृश्य अने निरतिशयी सुक्ष्म नाम कर्मोदयवतने सूक्ष्म कहे छे अने बादर एटले जे नियतस्थान वर्त्ती छे, परंतु कोइ वस्तुने भेदी शके नहि, पण जेनो भेद तथा छेद बीजी वस्तुथी थइ शके, जेने अग्नि बाळी शके, चर्मदृष्टिनो विषय थइ शके, जे मनुष्यादिक सर्व प्राणीना उपयोगमा आवी शके एवा दृश्य अने सातिशयी बादर नाम कर्मोदयवतने बादर कहे छे अने (पणिंदिया) पंचेंद्रिना (सन्नि)

संज्ञी एटले मन संज्ञा सहित अने बीजा (इयर) इतर एटले असंज्ञी एटले मन संज्ञा रहित एवा बे भेद छे (स) तेनी साथे (वि) बेइंद्रिय (ति) तेइंद्रिय (चउ) चउरिंद्रिय ए दरेकनो अकेको भेद मेळवता सात भेद थाय. अने तेमने (पज्जत्ता) पर्याप्ता अने (अपज्जत्ता) अपर्याप्ता गणतां (कमेण) अनुक्रमे करी (जीयठाणा) जीवनां स्थानक (चउदस) चौद थाय. वळी बीजा मत प्रमाणे जीवना बत्रीस भेद पण थाय छे. ते आ नीचेनी गाथा उपरथी समजी लेवा.

पण थावर सुहुमियरा, परित्तवण सन्नि असन्नि विगलतिगं ॥ इय सोलस पजत्ता अपजत्ता जीव बत्तीसं. ॥ १ ॥

अर्थ.—पांच सूक्ष्म स्थावर, पांच बादर स्थावर, प्रत्येक वनस्पतिकाय, सज्ञी पंचिंद्रि, असंज्ञी पचिंद्री अने विकलत्रिक ए सोल भेदने पर्याप्ता अने अपर्याप्ताए गणतां जीवना बत्रीस भेद थाय. ॥

गाथा ५ मीना छूटा शब्दोना अर्थ

नाणं=ज्ञान | वीरियं=वीर्य.
दंसणं=दर्शन | उवओगो उपयोग.
चेव=निश्चे | एअ= ए, आ
चरित्तं=चारित्र. | जीवस्स=जीवनु.
तवो तप | लक्खणं=लक्षण.
तहा=तेमज |

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥ वी
रियं उवओगोय, एअ जीवस्स लक्खणं ॥५॥

शब्दार्थ –ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप तेमज वीर्य अने उपयोग ए प्रकारे जीवनु लक्षण छे ॥ ५ ॥

विस्तारार्थ –(नाण) ज्ञान पाच प्रकारे छे मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यव अने केवल ए पाच ज्ञान समकितवतने कह्या छे अने मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान तथा विभगज्ञान ए त्रण अज्ञान मिथ्या दृष्टीने कह्या छे ए बेउ मळीने आठनी सख्या थाय छे, तेमानु गमे ते एक अथवा अधिक ज्ञान जेमा होय, (च) वली (दसण) दर्शन ते चार प्रकारे छे चक्षु, अचक्षु, अवधि अने केवल ए चार प्रकारना दर्शनमांनु गमे ते एक अथवा अधिक

जेमां होय, (चेव) निश्चे (चरित्तं) चारित्र ते सात प्रकारे छे सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, यथाख्यात, देशविरति तथा अविरति ए सात प्रकारना चारित्रमांनु गमे ते एक अथवा वधारे चारित्र जेमां होय, तथा (तवो) तप वे प्रकारे छे–एक द्रव्यथी ते अणशणादि अने वीजु इच्छानिरोधरूप भावथी एमांनु एक अथवा अधिक तप जेमा होय (तहा) तेम ज (वीरिय) करण तथा लब्धिरूप अथवा बल पराक्रमरूप ए वे प्रकारना वीर्यमांनु गमे ते एक अथवा वधारे जेमा होय तथा (उवओगो) उपयोग वार प्रकारे छे–पाच ज्ञान, त्रण अज्ञान तथा चार दर्शन, ए वार प्रकारना साकार तथा निराकाररूप उपयोगमांनो गमे ते एक अथवा वधारे उपयोग जेमा होय तेने ससारी अथवा सिद्ध जीव कहिये आ गुण जीव विना बीजा कोइमां होय नहि (एअ) ए प्रकारे (जीअस्स) जीवनु

(लक्खण) लक्षण जाणवु

गाथा ६ ठीना छूटा शब्दना अर्थ.

आहार=आहार.	चउ=चार.
सरीर=शरीर	पच=पाच
इंदिय=इंद्रिय	छप्पिय=छए (पण)
पज्जत्ती=पर्याप्ति	इग=एकेंद्रियने
आणपाण=श्वासोच्छ्वास	विगला=विकलेंद्रियने.
जास=जाषा	असन्नि=असंज्ञीने
मणे=मन	सन्नीण=संज्ञीने

आहार सरीर इंदिय, पज्जत्ती आणपाण जा
स मणे ॥ चउ पंच पंच छप्पिय, इग विगला
सन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥

शब्दार्थ –आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इंद्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, जाषा पर्याप्ति, मन पर्याप्ति तेमा चार पर्याप्ति एकेंद्रियने, पाच पर्याप्ति विकलेंद्रियने, पाच पर्याप्ति असंज्ञीने अने छ पर्याप्ति संज्ञी जीवोने होय छे ॥ ६ ॥

विस्तारार्थ –पुद्गलना उपचयथी थयो जे पुद्गल परिणमन हेतु शक्ति विशेष, तेने पर्याप्ति कहे छे. तेना बे जेद छे एक लब्धि पर्याप्ति अने बीजी क

रण पर्याप्ति, जे कर्मना उदयथी आरंभेली स्वयो-
ग्य पर्याप्ति सर्व पूरी करी नथी पण करशे तेने
लब्धि पर्याप्ति कहे छे अने जेणे स्वयोग्य पर्याप्ति
सर्व पूरी करी लीधी तेने करण पर्याप्ति कहे छे.
तेमज अपर्याप्ति पण बे प्रकारनी छे एक लब्धि
अपर्याप्ति अने बीजी करण अपर्याप्त आरंभेली
स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी करे नहि तेने लब्धि अपर्या
प्ति कहे छे अने जे स्वयोग्य पर्याप्ति सर्व पूरी क
रशे, पण हजी कीधी नथी तेने करण अपर्याप्ति
कहे छे वैक्रिय शरीरने एक शरीर पर्याप्ति अंत
र्मुहूर्तनी होय छे ने बाकीनी पाच एक समयनी
जाणवी. अने औदारिक शरीरने आहार पर्याप्ति
एक समयनी होय छे ने बाकीनी पांच अंतर्मुहू
र्तनी जाणवी उत्पत्ति समयने विषे ए सर्व पर्या
प्ति सर्व जीवो यथायोग्य रीते साथे आरंभे छे पण
पूरी अनुक्रमे करे छे ते पर्याप्ति छ प्रकारे छे. हरे
क जीवने भवांतरनी उत्पत्ति समये जे शक्तिवडे
आहार लइने तेने रसपणे परिणमाववानी शक्ति

विशेष तेने (आहार) आहार पर्याप्ति कहे छे. पछी ते रसरूप परिणामने रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा तथा वीर्य ए सात धातुपणे परिणमावीने शरीर बांधवानी जे शक्ति विशेष तेने (सरीर) शरीर पर्याप्ति कहे छे पछी ते सात धातुपणे परिणमाव्यो जे रस, ते जेने जेटलां इन्द्रिय जोइये तेने तेटलां इन्द्रियपणे परिणमाववानी जे शक्ति विशेष तेने (इंदिय) इन्द्रिय पर्याप्ति कहे छे (पज्जत्ति) पर्याप्ति ए शब्द दरेकनी साथे लगाडवो उपर कहेली त्रण पर्याप्ति पूरी कर्या विना कोइ जीव मरण पामे नहि माटे पर्याप्ति वचमा कह्यो छे ए त्रण पर्याप्ति बांधीने पछी श्वासोच्छ्वास योग्य वर्गणानां दलिक लइ श्वासोच्छ्वासपणे परिणमावीने अवलंबी मूकवानी जे शक्ति विशेष तेने (आणपाण) श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कहे छे भाषा योग्य पुद्गल लइ भाषापणे परिणमावीने अवलंबी मूकवानी जे शक्ति विशेष तेने (भास) भाषा पर्याप्ति कहे छे अने मनो वर्गणा

योग्य पुद्गल लइ मनपणे परिणमावीने अवलंबी मूकवानी जे शक्ति विशेष तेने (मणे) मन पर्याप्ति कहे छे. एवी रीते ए छ प्रकारे पर्याप्ति कही छे आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इंद्रिय पर्याप्ति तथा श्वासोश्वास पर्याप्ति ए (चउ) चार पर्याप्ति (इग) एकेंद्रियने होय आ चार पर्याप्तिनी साथे पाचमी भाषा पर्याप्ति जोडीए ते पाच पर्याप्ति (विगला) विकलेंद्रियने एटले बेइंद्रिय, तेइंद्रिय तथा चउरिंद्रियने प्रत्येके होय. एज (पंच) पांच पर्याप्तिउ (असन्नि) असंज्ञी पचेंद्रियने होय. अने (छप्पिअ) छए पर्याप्तिउ (सन्नीणं) संज्ञी पचेंद्रियने होय ॥ ६ ॥

गाथा ७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

पणिंदिय=पाच इंद्रियो.	छ-छ
तिवल=त्रण बल.	सग-सात
ऊसास=श्वासोश्वास	अठ आठ
आउ-आउखु-आयुष	इग-एकेंद्रियने
दस-दस.	ड-बेइंद्रियने.
पाण-प्राण.	ति-तेइंद्रियने.
चउ-चार.	चउरिंदिया-चउरिंद्रियने

समूर्छिम मनुष्य, अने वीजा समूर्छिम तिर्यंच, तेउ-
मा समूर्छिमतिर्यंचने तो उपर कहेला नव प्राण होय
छे, एवो नियम छे- पण समूर्छिम-मनुष्यने वचन
वल नहिं होवाने लीधे आठज प्राण होयछे तेमा
पण जो श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति वाधतो छतो मरण
पामे, तो सातज प्राण रहेछे अने जे मातापिताना
सयोगे करी गर्भने विषे उत्पन्न थाय छे, एवा म
नुष्य, तथा तिर्यंच, जे गर्भज जातिना होय, तथा
नारकी कुम्भीमा उपजे छे, ने देवता उत्पाद शय्या
मा उपजे छे, पण मातापिताना सयोगे गर्भमा
उपजता नथी, तोपण देवता अने नारकीने सज्ञी
पचेंद्रियने उपर कहेला नव प्राणनी साथे मनोवल
जोडयाथी दस प्राण होय छे ए सर्व द्रव्य प्राण
जाणवा, अने भाव प्राण तो आत्माना ज्ञानादि
गुण छे ते जाणवा ॥ ७ ॥

॥ इति श्री जीवतत्त्व वर्णन समाप्तम् ॥

गाथा ८ मीना छूटा शब्दोना अर्थ.

धम्मा=धर्मास्तिकाय.	खंधा=खंध
अधम्मा=अधर्मास्तिकाय.	देस=देश
आगासा=आकाशास्तिकाय	पएसा=प्रदेश.
तियतिय=त्रण त्रण.	परमाणु=परमाणु.
भेया=भेदो	अजीव=अजीव तत्त्व
तहेव=तेमज.	चउदसहा=चउदप्रकारें
अद्धा=काल.	

धम्माऽधम्माऽगासा, तिय तिय भेया त
हेव अद्धाय॥खंधादेसपएसा, परमाणु अजीव
चउदसहा ॥ ८ ॥

शब्दार्थः–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणना खंध, देश अने प्रदेश एवा त्रण त्रण भेदो छे एटले ते नव भेद थया तेवीज रीते वली काल, अने पुद्गलना खंध, देश, प्रदेश तथा परमाणु. ए प्रमाणे अजीव तत्त्व चौद प्रकारे छे.

विस्तारार्थ.–धम्मा एटले धर्मास्तिकाय, अधम्मा एटले अधर्मास्तिकाय, आगासा एटले आकाशास्तिकाय, ए त्रण द्रव्यना खंध, देश तथा प्रदेश, एवा तिय तिय भेया एटले त्रण त्रण भेद होवाथी प्र-

त्येक अस्तिकायने त्रणे गुणता नवनी सख्या थायछे प्रदेशना समूहने अस्तिकाय, कहेछे एवो अर्थ, उपर कहेला त्रण द्रव्योने लागु करवो ए त्रण द्रव्यनो चौद रज्ज्वात्मक खंध कहेवाय छे तेथी काइक उंणो होय अथवा सकल प्रदेशानुगत सामान्य परिणामनी पेरे अवयव धर्मास्तिकायना जेह बुद्धि परिकल्पिताद्यादि प्रदेशात्मक जे विभाग, तेने देश कहीये, अने जे प्रकृष्टदेश अति निर्विभाज्य अविभाज्य होय, ते प्रदेश कहेवायछे तहेव एटले तेमज अद्धा एटले काल द्रव्यनो वर्त्तमान समय रूप एकज प्रदेश होवाथी ते अस्तिकाय कहेवाय नहि, माटे एकज भेद जाणवो एम दस भेद थया य एटले चकार उभयान्वयी अव्यय छे एथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्य लेवु, तेना अखरू द्रव्य रूप आखा पदार्थने अथवा अनतादि परमाणुना मलेला समूहने खधा एटले खध कहे छे खधनो केटलोक भाग जेनो खधनी साथे सबध होय छे तेने देस एटले देश कहे छे जेनी खधनी साथे

निर्विभाज्य कल्पना करी उतां खंधनी साथे अभिन्न संबंध होय तेने पएसा एटले प्रदेश कहे छे. अने तेज प्रदेश जो खंधथी भिन्न थाय एवो जे निर्विभाज्य भाग एटले जेना केवलीनी बुद्धियें एक भागना बे भाग थइ शके नहिं तेने परमाणु एटले परमाणु कहे छे ए प्रमाणे पुद्गलास्तिकाय द्रव्यना चार भेद ते पूर्वे कहेला दस भेद साथे मेलवता अजीव एटले अजीवतत्त्वना चउदसहा एटले चौद भेद थाय. ॥ ८ ॥

गाथा ए मीना छूटा शब्दना अर्थ

धम्मा–धर्मास्तिकाय
अधम्मा–अधर्मास्तिकाय.
पुग्गल–पुद्गलास्तिकाय.
नह–आकाशास्तिकाय
कालो–काल
पंच–पांच
हुंति–होय छे
अजीव–अजीवद्रव्य.
चलणसहावो–चलन स्वभाववालो.
धम्मो–धर्मास्तिकाय
थिरसंठाणो–स्थिर संस्थान (स्वभाव) वालो
अहम्मो–अधर्मास्तिकाय.

धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति

अजीवा ॥ चलण सहावो धम्मो, थिर संठाणो अहम्मो य ॥ ए ॥

शब्दार्थ—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल ए पाच अजीव द्रव्य होय छे तेमा चलन स्वजाव गुणवालो धर्मास्तिकाय छे. अने स्थिर स्वजाव गुणवालो अधर्मास्तिकाय छे ॥ ए ॥

विस्तारार्थ—धम्मा एटले धर्मास्तिकाय, अधम्मा एटले अधर्मास्तिकाय, पुग्गल एटले पुद्गलास्तिकाय, नह एटले आकाशास्तिकाय, अने कालो एटले काल, ए पच एटले पाच अज्जीवा एटले अजीव द्रव्य हुति एटले छे ए पाचनी साथे जीवद्रव्य जेलवाथी षड्द्रव्य कहेवायछे

जेम मांछलाना सचारनु, पाणी ए अपेक्षा कारण छे, तेम जीवने तथा पुद्गलने गतिपणे परिणमता जे अपेक्षा कारण होय, तेने धर्मास्तिकाय कहे छे जेम पाणी विना माछलानु सचार थइ शके नहीं तेम धर्मास्तिकाय विना जीव अने पुद्गल चाली शके नहीं अर्थात् चलण सहावो ध-

म्मो एटले चलन स्वभाव गुण, ते धर्मास्तिकाय जाणवो.

जेम मुसाफरने विसामो लेवाने विषे वृक्षादिकनी छाया अपेक्षा कारण छे, तेम जीव तथा पुद्गलने स्थितिपणे परिणमतां जे अपेक्षा कारण होय, अर्थात् थिरसहाणो अहम्मो एटले स्थिर राखवानो सहजगुण तेने अधर्मास्तिकाय कहे छे ए बन्ने अरूपी द्रव्य चउद राजलोक व्यापी छे वर्ण, गंध, शब्द, रूप, स्पर्श तथा रसरहित असंख्यात प्रदेशी छे, जे उदासीन वृत्ति होय तेने अपेक्षा कारण कहे छे अ एटले चकार, पादपूर्णार्थ उभयान्वयी अव्यय छे ॥ ए ॥

गाथा १० मीना छूटा शब्दना अर्थ

अवगाहो=अवकाश(स्वभावगुण)	खंधा=स्कंध
आगास=आकाशास्तिकाय.	देस=देश.
पुग्गल=पुद्गलने	पएसा=प्रदेश
जीवाण=जीवने	परमाणु=परमाणु
पुग्गला=पुद्गल द्रव्य.	चेव=निश्चे.
चउहा=चार प्रकारे.	नायव्वा=जाणवा.

अवगाहो आगासं, पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा ॥ खंधा देसपएसा, परमाणू चेव नायवा ॥ १० ॥

शब्दार्थ –अवकाश आपवाना स्वभाववालो आकाशास्तिकाय जाणवो. पुद्‌गलो चार प्रकारना छे ते स्वध, देश, प्रदेश तथा परमाणु निश्चयथी जाणवा. ॥ १० ॥

विस्तारार्थ –आगास एटले आकाशास्तिकाय ते लोकालोक व्यापी वर्ण, रूप रस, गध, तथा स्पर्श रहित अरूपी अनत प्रदेशी अने साकरने दूधनी पेठे जेनो अवगाहो एटले अवकाश स्वभाव गुण छे अर्थात् एक प्रदेशथी बीजा प्रदेशमा जता जे अवकाशने आपे, तेने आकाशद्रव्य कहीये तेना वे भेद छे, एक लोकाकाश बीजो अलोकाकाश, ए विशेषता छे हवे कोइ अहीं शका करे के अवकाश कोने आपे छे? तेनो उत्तर ए छे, के पुग्गल जीवाण एटले पुद्‌गल तथा जीवने अवकाश आपेछे ते पुग्गला एटले पुद्‌गल द्रव्य चउहा एटले चार प्रकारे छे पूर्वे कहेला स्वरुप पुद्‌गल द्रव्यना

खंधा एटले खध, देस एटलेदेश, पएसा एटले प्रदेश, तथा परमाणुं एटलेपरमाणु, ए भेद चेवएटलेनिश्चये करीने नायव्वा एटले जाणवा योग्य छे. ॥ १० ॥

गाथा ११ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

सद्द=शब्द.	वन्न=वर्ण
अंधयार=अंधकार	गंध=गंध
उज्जोअ=उद्योत, प्रकाश.	रसा=रस
पभा=प्रभा, ज्योति.	फासा=स्पर्श
छाया=छाया, कांति	पुग्गलाणं=पुद्गलो
तवेहि=आतप	तु=निश्चे.
आ=वा, अथवा.	लक्खण=लक्षण

सद्दंधयार उज्जोअ, पभा छाया तवेहि आ ॥
वन्न गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं॥११॥

शब्दार्थः-शब्द, अंधकार, रत्नादिकनो प्रकाश, चंद्र विगेरेनी कांति, छाया, तडको अथवा वर्ण गंध, रस अने स्पर्श ए निश्चे पुद्गलोनुं लक्षण छे ॥ ११ ॥

विस्तारार्थ –सचित, अचित, अने मिश्र, ए त्रण प्रकारमांना गमे ते सद्द एटले शब्द, अंधयार एटले अंधकार, तथा रत्नप्रमुखनो उज्जोअ एटले प्रका-

तथा चंद्रमादिकनी पन्ना एटले ज्योति तथा छाया एटले छाया अने तवेहि एटले सूर्य प्रमुखनो आतप, आ एटले वा एटले बीजा नीचला पदार्थ पण जाणवा वन्न एटले वर्ण, गध एटले गध, रसा एटले रस, अने फासा एटले स्पर्श एवा गुणवालो होय अने जे चौद राजलोकमा व्यापक, सख्यात प्रदेशी, असख्यात प्रदेशी, तथा अनत प्रदेशीनो पूर्ण गलन स्वभाववान् एवो अखरु पुद्गलास्तिकायरूप खध, ते खधनो एक भाग अथवा काइ पण न्यून भागरूप देश, तथा जे केवलीनी बुद्धिये पण एक भागना बे भाग थइ शके नहीं, एवो अति सूक्ष्म खधनो अभिन्नभाग निर्विभाज्यरूप ते प्रदेश, तेनीज ज्यारे खधथी भिन्न कल्पना थाय त्यारे ते परमाणु कहेवाय छे ए पुग्गलाण एटले पुद्गलोनु तु एटले निश्चयपणे लरकण एटले लक्षण छे ॥१२॥

गाथा १३ मीना छूटा शब्दना अर्थ

एगाकोमि-एक क्रोड	लक्खा=लाख
सत्तसठि=सत्तसठ	सत्तहुत्तरि=सीत्योतेर

सहस्सा=हजार.	आवलिया=आवलिका
दोयसया=बसो.	इग=एक
सोलहिया=सोल अधिक.	मुहुत्तम्मि=मुहूर्तमा

एगाकोडि सतसठि, लक्खा सत्तहुत्तरी सहस्सा य; दोयसया सोलहिया, आवलिया इगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥

शब्दार्थ.–एक क्रोड, सडसठ लाख, सित्योतेर हजार अने बसो उपर सोल अधिक एटली आवलीयो एक मुहूर्तने विषे थायछे

विस्तारार्थ –एगाकोडि एटले एक क्रोड, सतसठि लक्खा एटले सडसठ लाख सत्तहुत्तरी सहस्सा एटले सित्योतेर हजार, दोयसया एटले बसे अने सोलहिया एटले सोल उपर, एटली आवलिआ एटले आवलिका इग मुहुत्तम्मि एटले एक मुहूर्त्तमा थाय छे य एटले चकार पादपूर्णार्थे अन्यान्वयी अव्यय छे हवे एनो भावार्थ कहे छे –आंखना एक फरकामा अथवा एक चपटी वजाडवामा अथवा जीर्ण वस्त्र फाडवाने वखते एक तंतुथी बीजे तंतुये जाय तथा कमलना पांदडाना समूहने यु-

वान पुरुषे न्हाला साथे विधता एक पादमांथी बीजे पादमे न्हालो पोहोंचे, एटला वखतमां असंख्याता समय थइ जाय, एटले वस्त्र अथवा पत्र फाडवाना आरम्नमां सूक्ष्मात् सूक्ष्म क्षणरूप जे काल होय छे, जेनो विन्नाग थइ शके नहीं जेनो नूत अने नविष्य विषे विचार थाय नहीं एटले वस्त्र अथवा पत्र फाडता प्रथम वर्तमान कालरूप अति सूक्ष्म कालनु उल्लंघन थइने ते ज्यारे नूत काल थयो ? कयो वर्तमान काल छे ? अने कयो नविष्यकाल थवा योग्य छे ? तेनु अनुमान थइ शके नहीं, तेने सर्व लघुकालरूप समय कहे छे एवा असंख्यात समयने आवली कहे छे एवी बसेने छप्पन आवलीए एक क्षुल्लकनव थाय छे ए करता बीजा कोइ पण नाना नवनी कल्पना थइ शके नहि. एवा काइक अधिक सत्तर क्षुल्लक नवमां एक श्वासोछ्वासरूप प्राणनी उत्पत्ति होय छे एवा सात प्राणोत्पत्ति कालने एक स्तोक कहे छे एवा सात स्तोक समये एक लव होय छे ए

वा सीत्योत्तेर खवे वे घमीरूप एक मुहूर्त्त होय छे-ते एक मुहूर्त्तने विषे पूर्वे कहेली १६७७७२१६ आवली होय छे ॥ १२ ॥

गाथा १३ मीना छूटा शब्दना अर्थ

समय=समय	भणिअं=कह्यु छे
आवली=आवली	पलिया=पल्योपम
मुहुत्ता=मुहूर्त	सागर=सागरोपम
दीहा=दिवस.	उस्सप्पिणी=उत्सर्पिणी
पक्खा=पक्ष-पखवाडीउं	सप्पिणी=अवसर्पिणी.
मास=महिनो.	कालो=कालचक्र
वरिसा=वरस.	

समयाऽवली मुहुत्ता, दीहा पक्खाय मास वरिसाय ॥ भणिअ पलिया सागर, उस्सप्पिणी सप्पिणी कालो ॥ १३ ॥

शब्दार्थः-समय, आवली, मुहूर्त्त, दिवस, पक्ष, मास, वर्ष, पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी अवसर्पिणी ए प्रमाणे काल कह्यो छे. ॥१३॥

विस्तारार्थः-अति सूक्ष्मकालने समय एटले समय कहे छे, असंख्याता समयने एक आवली एटले

आवली कहे छे, एवी १६७७७२१६ आवलीये मुहुर्त्त एटले एक मुहुर्त्त थाय छे, त्रीस मुहूर्ते दीहा एटले एक अहोरात्रिरूप दिवस थाय छे, पदर अहोरात्रिये परका एटले पखवाडियु थाय छे बे पखवाडीये मास एटले एक महीनो थाय छे, बार महिने वरिसा एटले एक वर्ष थाय छे, ए रीते नणिर्ज एटले कह्यु छे, तेमज असख्याता वर्षे एक पलिया एटले पल्योपम थाय, तेवा दस कोडा कोडी पल्योपमे सागर एटले सागरोपम थाय, तेवा दस कोडा कोडी सागरोपम उस्सप्पिणी एटले उत्सर्पिणी अने बीजा दस कोडा कोडी सागरोपमे सप्पिणी एटले अवसर्पिणी थाय, ए बे मलीने वीस कोडा कोडी सागरोपम कालो एटले कालचक्र थाय एवा अनता कालचक्रे एक पुद्गल परावर्त थाय ए सर्व मनुष्य लोकमा व्यवहारथी काल जाणवो

आ गाथामां बे ठेकाणे चकार छे, ते पाद पूर्णार्थे जनयान्वयी छे. एनो नावार्थ –पूर्वोक्त जे

कालना ज्ञेद कह्या, तेथी वली बीजा पण कालना ज्ञेद घणा ठे, ते पण जाणी लेवा जेमके बे मासे एक ऋतु थाय ठे, त्रण ऋतुये एक अयन, बे अयने एक वर्ष, पांच वर्षे एक युग, चोराशी लाख वर्षे एक पूर्वांग, ते एक पूर्वांगने चोराशी लाखे गुणता एक पूर्व थाय ठे, इत्यादिक कालना अनेक ज्ञेद ठे, ते सर्व बीजा शास्त्रोथी जाणवा.

गाथा १४ मीना वूटा शब्दना अर्थ

परिणामी=परिणामी.	णिच=नित्य
जीवा=जीव	कारण=कारण.
मुत्त=मूर्तिमन.	कत्ता=कर्चा
सपएसा=समदेशी.	सव्वगय=सर्वगत
एग=एक.	इयर=इतर (असर्वगत).
खित्त=क्षेत्र.	अप्पवेसे=प्रवेशरहित
किरीआय=सक्रिय	

परिणामि जीव मुत्तं, सपएसा एग खित्त किरिआय ॥ निच्च कारण कत्ता, सवगय इयर अप्पवेसे ॥ १४ ॥

शब्दार्थः-परिणामि, जीव, मूर्त, समदेशी, एक, क्षेत्र, क्रिया,

नित्यपणु, कारण, कर्ता, सर्वगत, थयी उलटा अप्रदेशी ॥१४॥

विस्तारार्थ -छ द्रव्यमां जीव अने पुद्गल,ए वे द्रव्य परिणामी एटले परिणामि छे, वाकीना चार द्रव्य अपरिणामी छे, इहा परिणामनो भाव जाणवो, परतु स्वभावे परिणामी तो छ ए द्रव्य छे, छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य, जीव एटले जीवछे,अने वाकी पाच द्रव्य अजीव छे, छ द्रव्यमा एक पुद्गलद्रव्य, मुत्त एटले मूर्तिमत रूपी छे, वाकीना पाच द्रव्य, अमूर्तिमत अरूपी छे, छ द्रव्यमा पाच द्रव्य सपएसा सप्रदेशी छे, अने एक कालद्रव्य अप्रदेशी छे,छ द्रव्यमा धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रण द्रव्य एग एटले एक छे, वीजा त्रण द्रव्य अनेक छे, छ द्रव्यमा एक आकाश, खित्त एटले क्षेत्र छे, वीजा पाच द्रव्य क्षेत्री छे, छ द्रव्यमा जीव अने पुद्गल ए वे द्रव्य, किरिआय एटले सक्रिय छे, वाकीनां चार अक्रिय छे, छ द्रव्यमा धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य णिच्च एटले नित्य छे, वे अनित्य छे, यद्यपि उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणे सर्व पदार्थ नित्यानित्य

पणे परिणमे छे, तथापि धर्मादिक चार द्रव्य सदा अवस्थित, माटे नित्य कह्या, छ द्रव्यमां धर्मादि पांच द्रव्य, कारण एटले कारण छे, एक जीवद्रव्य, अकारणरूप छे, छ द्रव्यमां एक जीवद्रव्य, कत्ता एटले कर्त्ता छे, बीजा पाच अकर्त्ता छे, छ द्रव्यमां एक आकाश, सवगय एटले सर्वगत छे, अने इयर एटले बीजा पांच द्रव्य मात्र, लोकव्यापी छे, माटे असर्वगत जाणवा, तथा यद्यपि छ द्रव्य क्षीर नीरपरे परस्पर अवगाढ छे, तथापि अप्पवेसे एटले प्रवेश रहित छे एटले कोइ पण द्रव्य अन्य द्रव्य मां तद्रूपपणे थतु नथी माटे प्रवेश रहित छे, "सदसगभाव न विजहति" ए वचन माटे ॥ १४ ॥

अहींआं छ द्रव्यनु कांइक विशेष कहे छे स्वभावथी गतिक्रिया परिणत एवा जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य छे. त्यां पोताना स्वभावने धारवु, पोषवुं, तेने धर्म कहीये, अने अस्ति एटले प्रदेश. तेनो काय एटले समूह तेने धर्मास्तिकाय कहिये, ॥२॥ तेमज गति क्रिया परिणत जीव तथा पुद्गलने

अवष्टंन्न दान स्वन्नाव लक्षण ते अधर्मास्तिकाय
द्रव्य कहिये ॥२॥ तेमज गति क्रिया परिणत जीव
तथा पुद्गलने अवकाशदान लक्षण स्थिति अतर्गत
प्रविष्ट कीलक न्याय आकाशास्तिकाय द्रव्य जा-
णवुं ॥३॥ तथा समस्त वस्तु समुदायनुं कलन सं-
ख्यान अथवा समयावलिकादिके करी सचेतना
चेतन पदार्थने जेणे करी कलिये, एटले जाणीये,
एवो अमूर्त्त, लोकव्यापी, वर्त्तना लक्षण, असंख्य
समयात्मक, नैश्चयिक समय लोकव्यापी, अनत स-
मयात्मक कालद्रव्य जाणवुं ॥४॥ तथा पूर्णे गलन
स्वन्नाव, ते पुद्गल अनत अणु स्कधपर्यंत जे पर-
माणवादिक, ते कोइक द्रव्यथी गले, वियोग पामे,
तथा स्वन्नाव थकी कोइक द्रव्य प्रत्ये पुष्टि करे, ते
पुद्गल द्रव्य कहिये, तेना जे प्रदेशनो समूह, तेने
पुद्गलास्तिकाय कहिये ॥५॥ ए असख्यानत प्रदेश
प्रमाण मूर्त्तद्रव्य सकल लोक व्यापी जाणवो तथा
इंद्रियादिक दस द्रव्य प्राण अने ज्ञानादि चतुष्क
न्नाव प्राण प्रत्ये धारित लक्षणे करी जीव द्रव्य तेते

जीव त्रिकाल स्थायी अविनाशी असंख्य प्रदेशात्मक जीवास्तिकाय जाणवो. ॥ ६ ॥ ए ठ द्रव्य कह्यां.

एमा काल द्रव्यनुं स्वरूप कांइक विशेषे कहेछे. काल जे छे, ते मनुष्य क्षेत्रने विषे 'तद्गतिभव नानाविध छे, यदुक्तं ज्योतिः करंडक ग्रंथे ॥ गाथा ॥ लोयाणु भजणीयं, जोइसचक्क भणंति अरिहंता ॥ सवे कालविसेसा, जस्स गइ विसेस निप्पन्नो ॥ १ ॥ अहीयां केटलाएक कहे छे के जीवादिक द्रव्यने वर्त्तनादिक जे पर्याय तेहिज काल जाणवो, ते पृथक् द्रव्यने हेतुये केवी रीते छे? तेनुं समाधान करे छे ॥

'जीवद्रव्यने वर्त्तना, परिणाम, क्रिया अने परावर्त्तादिक, ए सर्व काल व्यपदेशभाक् छे, तिहां जे जीवने सादि 'सातादि चार भेदे वर्त्तवुं, ते वर्त्तना जाणवी, तथा जे विस्रसा प्रयोगे जीवद्रव्यनी परिणति ते परिणाम जाणवो; तथा भूत, भावि अने भविष्यत् विशेषणवंत जीवने गमन स्थित्यादिक कार्यनी चेष्टा, ते क्रिया जाणवी

परापरत्व एटले पूर्वभावि पश्चाद्भावी परापर इ

त्यादि यदाश्रये द्रव्यने कहेवुं ते ए प्रमाणे वर्त्तनादिक सर्व द्रव्यना पर्याय छे ते सर्व कालव्यपदेशभाक् छे, जेमाटे कथंचित्पणे द्रव्यथी अभिन्न द्रव्यनामी पर्याय पण कहिये, ते माटे पर्यायने द्रव्यपणु करते अनवस्था प्रसंग थाय ते माटे, काल ते पृथक् द्रव्य नहीं, वर्त्तनाद्यात्मक काल जीवाजीव द्रव्य पर्यायपणे मानवो, एम जो नहि मानीये तो आकाशनीपेरे सर्व व्यापि कालास्तिकाय मानवो ? एवो परवादिनो आशय ग्रहण करी शिष्ये पूछ्युं, त्यारे गुरु उत्तर कहे छे, के हे देवाणुप्रिये ! ए आप्त वचन नहि केमके सिद्धांतमां पांच अस्तिकाय कह्या छे, अने छठ्ठं कालद्रव्य पृथक् कह्यु छे जे प्रदेशनुं बहुपणुं होय, तेने अस्तिकाय कहिये, अने कालने विषे प्रदेशनुं बहुपणुं नथी, जे माटे कालने विषे मात्र वर्त्तमान एक समय प्ररूपणा छे, अने अनागत समयनी अनुपपत्ति छे.

गाथा १५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

सा=शातावेदनीय	आइ=आदीना.
उच्चगोअ=उच्चगोत्र.	तितणु=त्रण शरीर.
मणुदुग=मनुष्यद्विक	उवगा=उपांग (अंगोपांग)
सुरदुग=सुरद्विक	आइम=आदीम-पहेलुं.
पंचिंदिजाइ=पंचेंद्रि जाति	संघयण=संघयण
पणदेहा=पांच शरीर.	संठाणा=संस्थान

सा उच्चगोअ मणुदुग, सुरदुग पंचिंदिजा-
इ पणदेहा ॥ आइति तणुणुवंगा, आइम
संघयण संठाणा ॥ १५ ॥

शब्दार्थः-शातावेदनीकर्म, उच्चगोत्र, मनुष्यद्विक, सुरद्विक, पंचें द्रिजाति अने पांच देह तेमां पहेला त्रण शरीरना अंग अने उपांग, अने पहेलुं [वज्रऋषभनाराच] संघयण तथा पहेलुं (समचतुरस्र) संस्थान

विस्तारार्थ -पहेलुं साधु विगेरेने अन्न दीधाथी, बीजुं पाणी दीधाथी, त्रीजु रहेवाने स्थानक देवाथी, चोथुं सूवाने पाट प्रमुख देवाथी,पांचमु पहेरवा ओढवाने वस्त्रादिक दीधाथी,छठुं ते विषे मने करी शुभ संकल्प कर्याथी, सातमुं वचने करी स्तुत्यादिक कर्याथी,

आठमु कायाये करीसेवा कर्याथी,तथा नवमुद्दाये करी नमस्कारादिक कर्याथी ए नव प्रकारे पुण्य वधाय ठे. तेने बेंतालीश प्रकारे जीव जोगवे ठे ते कहे ठे.

१ सा एटले सातावेदनीय ते जेना उदये जीव, सुखनो अनुजव करे, २ उच्चगोअ एटले उच्चगोत्र ते उच्चकुलमां जन्म धारण करीने लोकने विषे पुजा प्रतिष्ठादिकने पामे ३ मणुदुग एटले मनुष्यद्विक ते जेना उदये मनुष्यनी गति तथा ४ मनुष्यनी अनुपूर्वीनी प्राप्ति थाय जेना उदये ५ देवनी गति तथा ६ देवनी अनुपूर्वी पमाय ठे ते, (वक्रगतिये परजवमा जता वलदने नाथ घालीने सीधो चलाव वानी पेठे जेथी उपजवाने स्थानके पहोंची शकाय, तेने अनुपूर्वी कहे ठे) ए सुरदुग एटले सुरद्विकरूप नामकर्म कहिये ७ पंचिंदिजाइ एटले पचेंद्रिय जाति नामकर्म कहिये जेना उदये पाच शरीरनी प्राप्ति थायठे, ते कहेठे.–८ ओंदारिक नामकर्म एटले जेथी ओंदारिक शरीर योग्य पुद्गल ग्रहण करीने तथा तेने शरीरपणे परिणमावीने जीव, पोताना प्र

देशनी साथे मेळवे ठे ते. एवी रीते सर्व शरीरने विषे योजना करवी. ए वैक्रिय शरीरना वे नेद ठे. एक ओपपातिक ते देवता तथा नारकीने होय ठे. वीजो लब्धि प्रत्ययीउं ते तिर्यंच तथा मनुष्य लब्धिवंतने होय ठे. १० चौद पूर्वधर मुनिराज तीर्थंकरनी ऋद्धि प्रमुख जोवाने अर्थे एक हाथ प्रमाण देह धारण करे ते आहारक शरीर ११ आहारनुं पचन करनार तथा तेजोलेश्यानो हेतु ते तैजस शरीर, १२ अने कार्मण शरीर ते कर्मना परमाणु आत्मप्रदेशनी साथे मळ्यां ठे एम जाणवुं, ए पणदेहा एटले पंच शरीररूप नामकर्म कहिये जेना उदयथी कहेलां पांच शरीरमाना आइ एटले आदिनां ओदारिक,वैक्रिय तथा आहारक ए तिलणु एटले त्रण शरीरना वे बाहु, वे ऊरु, एक पृष्टिका, एक मस्तक, एक उदर, तथा एक हृदय, ए आठ अंग ठे, अने अंगुलि प्रमुख उपांग ठे, तथा रेषादिक अंगोपांग ठे, एटले १३ ओदारिक अंगोपांग, १४ वैक्रिय अंगोपांग, १५ आहारक अंगोपांग अने तैजस शरीर, तथा कार्मण शरीर, ए वेने अंगोपांग नथी, ते

थी पहेलां त्रण शरीरनाज अंगोपांग कह्यां छे, तेने उवगा एटले अंग,उपांग,तथा अंगोपांगरूप नामकर्म कहिये १६ जेना उदयथी छ सघयणमांनु आद्य एटले पहेलु वज्रऋषभनाराच नामनु सघयण प्राप्त थाय छे, तिहां वज्र एटले खीली, ऋषभ एटले पाटो तथा नाराच एटले बे पासा मर्कटबंध, एटले मर्कटबध ते उपर पाटो ते उपर खीली एवो हाडनो निचय एटले समुदाय होय, तेने सघयण एटले अस्थिनिचय सघयणरूप कहिये १७ जेना उदयथी पोते पर्यंकासन करी बेठा छता समचतुरस्र चारे बाजु सरखी आकृति थाय अने पोताना अंगुल प्रमाणवडे एकसोने आठ अंगुलप्रमाण शरीर जराय, तेने सठाणा एटलेछ सस्थानमानु पहेलु समचतुरस्र संस्थान कहिये ॥ १५ ॥

गाथा १६ मीना छूटा शब्दोना अर्थ

वएणचउक्का=वर्ण चतुष्क	उज्जोअ=उद्योत
अगुरु लहु=अगुर लघु	सुभखगइ=शुभ विहायोगति
परघा=पराघात.	निमिण=निर्माण
ऊसासा=श्वासोश्वास	तसदस=त्रसदशक
आयव=आतप	सुर (आउ)=सुरायुष्य.

नर (आउ)=नरायुष्य. | तिथ्थयरं=तिर्थंकर
तिरिआउ=तिर्यंचायु

वन्न चउक्का गुरु लहु, परघा ऊसास आय वुज्जोअं ॥ सुभखगइ निमिण तसदस, सुरनर तिरिआउ तित्थयरं ॥ १६ ॥

शब्दार्थ—वर्णचतुष्क नामकर्म अगुरु लघु, पराघात, श्वासोश्वास, आतप, उद्योत, हंस, रुपजनी पेठे सारी चाल ते शुभविहायो गति, सु घाटरूप निर्माण, त्रसदशक, देव, मनुष्य अने तिर्यचनु आयुष्य अने तीर्थंकर नामकर्म ॥ १६ ॥

विस्तारार्थ —जेना उदयथी १७ श्वेत, रक्त अने पीत रूप शुभवर्ण, १९ एक सुरभि गंधरूप शुभ गंध; २० आंबिल, मधुर अने कषायेल रूप शुभरस, तथा २१ लघु, मृदु, उष्ण अने स्निग्धरूप शुभ स्पर्श, ए चार पदार्थ पुण्यप्रकृतिने अर्थे प्रशस्त जाणवा एनी प्राप्ति थाय छे तेने वण्णचउक्का एटले वर्ण चतुष्करूप कहिये

२२ जेना उदयथी मध्यम वजनदार शरीरनी प्राप्ति थाय, एटले लोहनी पेठे अति भारे पण नहीं अने

आकमाना कपासनी पेठे अति हलको पण नहीं किंतु मध्यम परिणामी होय, तेने अगुरु लहु एटले अगुरु लघु नामकर्म कहिये.

२३ परघा एटले पराघात नामकर्म ते जेना उदयथी बीजा बलवाननें अति दुःसहनीय छतां पोते गमे तेवा बलीयाने जीतवाने समर्थ थाय छे, एवा बलनी प्राप्ति थाय ते

२४ जेना उदयथी सुखपूर्वक श्वासोश्वास लेइ शकाय, कांइ पण विघ्न पमे नहीं, तेने ऊसास एटले श्वासोश्वास नामकर्म कहिये

२५ आयव एटले आतप नामकर्म ते जेना उदयथी सूर्यना बिंबनी पेठे परने ताप उत्पन्न करवाना हेतु रूप तेजोयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय छे ते

२६ उज्जोअं एटले उद्योतनामकर्म ते जेना उदयथी चंद्रबिंबनी पेठेपरनेशीतलताउत्पन्नकरवाना हेतु रूप तेजोयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय ते

२७ सुभखगइ एटले शुभविहायो गति नामकर्म कहिये, ते जेना उदयथी वृषभ तथा हंसनी पेठे सारी

चलनशक्तिनी प्राप्ति थाय ते.

२८ निमिण एटले निर्माण नामकर्म ते जेना उदयथी सूथारनी पेठे पोताना शरीरना सर्व अवयव योग्य स्थले गोठववानी शक्ति प्राप्त थाय ते

२९ थी ३८ जेना उदयथी त्रस दसको एटले त्रसादि दस प्रकृति जे आगल कहेवामा आवशे तेनी प्राप्ति थाय छे तेने तसदस एटले त्रसदशक नामकर्म कहिये तेनु विवरण आगलनी गाथामां कहेवाशे

३९ जेना उदयथी देवताना आयुष्यनी प्राप्ति थाय छे तेने सुर एटले सुरायुष्यरूप कहिये

४० जेना उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय छे, तेने नर एटले नरायुष्यरूप कहिये

४१ तिरिआउ एटले तिर्यंचायुष्यरूप कहिये ते जेना उदयथी तिर्यंचना आयुष्यनी प्राप्ति थाय ते.

४२ जेना उदयथी त्रण भुवनने पुज्यपणु थाय छे, तेने तित्थयरं एटले तीर्थंकर नामकर्म कहिये. ए कर्मनो उदय, मात्र केवलीनेज थाय छे.

गाथा १७ मीना छूटा शब्दना अर्थ

तस=त्रस.	सुस्सर=सुस्वर
बायर=बादर	आइज्ज=आदेय
पज्जत्त=पर्याप्ति	जस=जस, यश
पत्तेअ=प्रत्येक	तसाइ=त्रसादि
थिर=स्थिर.	दसग=दस प्रकृति.
सुभ=शुभ	इम=आ, ए.
सुभग=सौभाग्य	होइ= होय छे, छे

तस बायर पजत्तं, पत्तेय थिर सुभं च सुभगं च॥ सुस्सर आइज्ज जसं, तसाइ दसगं इमं होइ ॥ १७ ॥

शब्दार्थ –त्रस, बादर, पर्याप्ति, प्रत्येक, स्थिरना, शुभ, सौभाग्य, सुस्वर, आदेय अने जस पुण्यना भेदमा आ त्रस विगेरे दस नामकर्म होय छे ॥ १७ ॥

विस्तारार्थ –१ तस एटले त्रस नामकर्म ते जेना उदयथी जीवने बेंद्रियना शरीरनी प्राप्ति थाय, अर्थात् एक इंद्रियनु शरीर पामे नहीं

२ बादर एटले बादर नामकर्म ते जेना उदयथी बादर शरीरनी प्राप्ति थाय, पण जे दृष्टिये करी देखाय नहिं एवा सूक्ष्म शरीरने न पामे ते

३ पज्जत्तं-एटले पर्याप्ति नामकर्म ते जेना उदयथी आप आपणी पर्याप्ति पूरी करे ते पर्याप्ति बे प्रकारे छे, एक लब्धि, बीजी करण

४ पत्तेअ एटले प्रत्येक नामकर्म ते जेना उदयथी औदारिक अथवा वैक्रिय प्रमुख भिन्न भिन्न शरीरनी प्राप्ति थाय, पण घणा जीवो वच्चे एक शरीर न पामे.

५ थिरं एटले स्थिर नामकर्म ते जेना उदयथी शरीरना दंतादिक अवयवोने स्थिरतानी प्राप्ति थाय ते.

६ सुभं एटले शुभ नामकर्म ते जेना उदयथी शरीरना सर्व अवयव सारा होय, अथवा नाभिना उपरनुं शरीर सारुं होय

७ सुभग एटले सौभाग्य नामकर्म ते जेना उदय थी सर्व लोकने प्रिय थाय

८ सुस्सर एटले सुस्वर नामकर्म ते जेना उदयथी वाणीमां कोयलनी पेठे मधुरता थाय.

९ आइज्ज एटले आदेय नामकर्म ते जेना उदयथी लोकने विषे माननीय वचन थाय

१० जसं एटले यशो नामकर्म ते जेना उदयथी

लोकने विषे यश कीर्ति थाय एवी रीते तसाइदसगं एटले त्रस आदिक दस प्रकृतिनुं दशक, इमं एटले ए पुण्यना भेदमा होइ एटले छे ते पूर्वोक्त बत्रीस मा भेलीये त्यारे बेंतालीस थाय ए पुण्य तत्त्वना बेंतालीस भेद कह्या चे चकार पादपूर्णार्थे छे. ॥१७॥

इति श्री पुण्यतत्त्व विचार समाप्त

गाथा १८ मीना छूटा शब्दना अर्थ

नाण=ज्ञानावरणीय.	असाय=अशातावेदनीय
अंतराय=अंतराय.	मिच्छत्त=मिथ्यात्व मोहनीय.
दसग=दश प्रकार.	थावरदस=स्थावरदशक.
नव=नव	नरयतिग=नरकत्रिक.
बीए=बीजा एटले दर्शनावरणीयना	कसाय=कषाय
	पणवीस=पचीस
नीअ=नीचगोत्र.	तिरियदुग=तिर्यंचद्विक.

नाणंतरायदसगं, नव बीए नीअसायमिच्छत्तं ॥ थावरदस निरयतिगं, कसायपणवीस तिरियदुगं ॥ १८ ॥

शब्दार्थ –ज्ञानावरणीयना पांच अने अंतरायना पांच एम बन्ने मलीने दस पापकर्मना भेद, बीजा दर्शनावरणीय कर्मना नव

भेद, नीचगोत्र पापकर्म, असातवेदनी पापकर्म, मिथ्यात्व पापकर्म, स्थावर दशक पापकर्म, नरकत्रिक पापकर्म, पचीस कषाय रूप पापकर्म, तिर्यंचद्विक पापकर्म ॥ १८ ॥

विस्तारार्थः–प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रतिअरति परपरिवाद, मायामोसो, तथा मिथ्यात्वशल्य, ए अढार प्रकारे पाप बंधाय छे, अने ब्याशी प्रकारे भोगवाय छे, ते ब्याशी प्रकार कहे छे–

१ मति ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी पांच इंद्रिय, तथा मनोद्वाराए जे नियत वस्तुनुं ज्ञान थाय छे, एवा प्रथम मतिज्ञाननु जे आछादन थायते.

२ श्रुत ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी शास्त्रानुसारे जे ज्ञान थाय छे एवा श्रुतज्ञाननुं आछादन थाय ते.

३ अवधि ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी इंद्रियादिकनी अपेक्षा विना, आत्मद्रव्यने जे साक्षात् रूपी द्रव्यने जाणवानुं जे ज्ञान थाय छे, एवा अवधि ज्ञाननुं जे आछादन थाय ते.

४ मन पर्यव ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी सज्ञी पचेंद्रियना मनोगत भाव जाणवानु जे ज्ञान थाय छे, एवा मन पर्यव ज्ञाननु जे आछादन थाय छे ते

५ केवल ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी पूर्वोक्त चार ज्ञान रहित जे एकलु निरावरण ज्ञान होय, एवा केवल ज्ञाननु जे आछादन थाय ते. एवी रीते पाच प्रकारना ज्ञानने जे आछादन करे तेने नाण एटले ज्ञानावरणीय पापकर्म कहिये

६ दानातराय पापकर्म एटले जेना उदयथी पोताना घरमा देवा योग्य वस्तु छता तथा दाननु फल जाणता छतां पण आपी शकाय नही ते

७ लाभातराय पापकर्म एटले जेना उदयथी दातार छता, दातारना घरमा वस्तु छता, मागनार काहो छता, पण जे याचित वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते

८-९ भोगातरराय तथा उपभोगातराय पापकर्म एटले जेना उदयथी पोते यौवन छतां, सुरूप छता, तथा, भोगोपभोग वस्तुनी प्राप्ति थइ छतां, पण ते

नोगवाइ न शकाय ते पुष्पादि, पदार्थ जे एकवार नोगवाय ठे, तेने नोग कहे ठे अने वस्त्रादिक पदार्थ जे वारंवार नोगवाय ठे तेने उपनोग कहिए ए बेनो अतराय ते

१० वीर्यांतराय पापकर्म एटले जेना उदयथी पोते यौवन, रोगरहित, तथा बलवान ठतां पण पोतानी शक्ति फोरवी शके नहीं

एवी रीते पाच प्रकारे जे आमु आवे, तेने अंतराय एटले अंतराय नामनुं पापकर्म कहिये-पहेला पांच तथा ए पांच मलीने दसग एटले दस प्रकार थया. हवे नववीए एटले बीजा नव प्रकार दर्शनावरणीय कर्मना जाणवा तेमां चार नेद दर्शनना, तथा पाच नेद निद्राना कहेठे (सामान्य उपयोगने दर्शन कहेठे)

११ चक्षुदर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी आंखे करी जे रूपनुं सामान्यपणे ग्रहण थाय, एवा चक्षुदर्शननुं आछादन थाय ते.

१२ अचक्षुदर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी, चक्षु विना चार इंद्रिय तथा मने करी पोतपो

तॉना विपयनु जे सामान्यपणे ग्रहण थाय, एवा अ-चक्षुदर्शननुं जे आछादन थाय ते

१३ अवधि दर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी सामान्यपणे जे रूपी द्रव्यनुं मर्यादापणे ग्रहण थायछे, एवा अवधि दर्शननु जे आछादन थाय ते.

१४ केवल दर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी समस्त वस्तुनु जे सामान्यपणे देखवु थायछे एवा केवल दर्शननु जे आछादन थाय ते

१५ निद्रारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी निद्रावस्था थई गया पछी सुख पूर्वक जागृदवस्थानी प्राप्ति थाय ते

१६ निद्रानिद्रारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी निद्रावस्था थइ गया पछी दुःखपूर्वक जागृदवस्थानी प्राप्ति थाय ते

१७ प्रचलारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी बेसतां तथा ऊठता निद्रा आव्यां करे

१८ प्रचला प्रचलारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी हरता फरता पण निद्रा आवे ते

१९ थीणद्धीरूप पापकर्म एटले जेना उदयथी दिवसनु चिंतवेलुं कार्य रात्रिने विषे निद्रा समये जागृतनी पेठे थाय ते थीणद्धी निद्राना समये प्राणी वासुदेवना अर्द्धबलयुक्त होय छे, अने ते जीव नरक गामी जाणवो.

२० जेना उदयथी पोते रूपवान तथा धनवान छता नीच कुलने विषे उत्पन्न थाय, तेने नीय एटले नीचैर्गोत्ररूप पापकर्म कहिये ए नीच गोत्ररूप पापकर्म निंदापात्र छे

२१ जेना उदयथी दुःखनो अनुभव थाय, तेने असाय एटले अशातावेदनी पापकर्म कहे छे.

२२ मिछत्त एटले मिथ्यात्व मोहनीय पापकर्म ते जेना उदयथी वीतरागना वचननी विपरीत सद्दहणा थाय

२३–३२ जेना उदयथी स्थावरदशकनी प्राप्ति थाय, तेने थावरदस एटले स्थावरदशक नामनुं पापकर्म कहीये.तेआगल कहेवाशे,माटेअहीं नाममात्रदर्शाव्युंछे.

३३–३५ जेना उदयथी नरकनी गति, नरकनी आ

नुपूर्वी, तथा नरकनु आउखु प्राप्त थाय, तेने नरयतिग एटले नरकत्रिक पापकर्म कहिये

कसायपणवीस एटले पचीस कषायरूप पापकर्मना पचीस प्रकार छे, तेउमा सामान्यथी तो पहेला सोल कषाय अने बीजा नवनोकषाय, एवा बे प्रकार छे तेउनु अनुक्रमे वर्णन करे छे

३६–३९ अनंतानुबंधी पापकर्म एटले जेना उदयथी अनंत संसार वधाय, एना चार प्रकार छे, क्रोध, मान, माया अने लोज्ज ए जावज्जीवलगी कायम रहे, सम्यक्त्व आववा न दीये, अने अंते नरकने विषे पहोंचाके, ए क्रोध पर्वतनी लीटी जेवो छे, मान पाषाणना थाजला जेवु छे, माया वांसना मूल जेवीछे, ने लोज्ज करमजना रंग जेवो छे

४०–४३ जेना उदयथी थोका प्रत्याख्याननी पण प्राप्ति न थाय, तेने अप्रत्याख्यानीय पापकर्म कहिये-एना क्रोध, मान, माया ने लोज्ज ए चार ज्नेद छे ए एक वर्षसुधी कायम रहे छे, देशविरतिपणु आववा दे नहि ने अंते तिर्यंचनी गतिनी प्राप्ति करावे ए क्रोध, सुकाए-

ला तलावनी रेखा जेवो छे, मान हाडकाना थांजला जेवुं छे, माया मेंढाना शिंगडा जेवी छे, तथा लोज्ज कर्दम एटले कादवना रंग जेवो छे.

४४-४७ प्रत्याख्यानीय पापकर्म एटले जेना उदयथी सर्व विरतिरूप प्रत्याख्यानने आछादन थाय ते एना क्रोध, मान, माया ने लोज्ज ए चार ज्ञेद छे, ए चार मास सुधी कायम रहे छे. सर्व विरतिरूप चारित्रनो घात करे, तथा छेवट मनुष्यनी गति उत्पन्न करावेछे. ए क्रोध रेतीनी रेखा जेवो छे, मान काष्ठना थांजला जेवुं छे, माया बलदना मूत्रनी रेखा जेवी छे, अने लोज्ज काजलना रंग जेवो छे

४८-५१ जेना उदयथी चारित्र धारण करनार थोडुक दीपे, तेने सञ्ज्वलन पापकर्म कहिये. एना पण क्रोध, मान, माया ने लोज्ज ए चार ज्ञेद छे ए पंदर दिवस सुधी कायम रहे छे यथाख्यात चारित्रने आवरण करे अने देवगतिनी प्राप्ति करावे छे. ए क्रोध पाणीनी रेखा जेवो छे. मान नेतरना थांजला जेवुंछे.

माया वांसनी ठाल जेवी ठे, अने लोन्न हलदरना रग जेवो ठे

एवी रीते चार चार न्नेदे कपाय कहेता सोल कपायनु वर्णन कर्युं. हवे नवनोकपाय कहे ठे जे कपायने सहचारी होय ते नोकपाय

५१-५३ जेना उदयथी एक वस्तुनिमित्ते तथा बीजीपर निमित्ते, ए वे प्रकारथी हास्य,रति,अरति, शोक,न्नय तथा डुगठानी उत्पत्ति थाय, तेने हास्यपटकुरुप पापकर्म कहीए

५० जेना उदयथी स्त्री न्नोगववानी इछा थाय तेने पुरुपवेदरुप पापकर्म कह[illegible] [illegible] ७५मा

५ए जेना [illegible] पुरुप न्न[illegible] इछा थाय तेने स्त्री[illegible] वकरीनी

ठे

आनुपूर्वीनी प्राप्ति थाय तेने तिरिय दुग एटले तिर्यंच द्रिक नामकर्म कहाए ॥ १७ ॥

गाथा १ए मीना दूटा शब्दना अर्थ.

इग=एकेंड्रिय जाति.
बि=बेइंद्रिय जाति.
ति=तेइंडिय जाति.
चउ=चतुरिंडिय जाति.
जाईओ=जातिओ.
कुखगइ=अशुज विहायोगति
उवघाय=उपघात
हुंति=होयछे
पावस्स=पापना.
अपसव्व=अप्रशस्त.
वसचउ=वर्ण चतुष्क
अपढम=अप्रथम (पहेला सिवायना).
सघयण=संघयण.
संगाणा=संस्थान

इग बि ति चउ जाईउ, कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥ अपसत्थं वस चऊ, अपढम संघयण संगाणा ॥ १ए ॥

शब्दार्थः–एकेंडिय, बेंडिय, तेरिंडिय अने चौरेंडिय जातिरूप पापकर्म, उट विगेरेनी पेठे अशुज विहायोगति पापकर्म, उपघात नाम पापकर्म, मांठा एवा रूप, रस, गंध अने स्पर्शरूप पापकर्म, तेमज पहेला संघयण अने पहेला संस्थान विनाना बीजा संघयण अने संस्थानरूप पापकर्म.

माया वासनी ठाल जेवी ठे, अने लोज्ञ हलदरना रंग जेवो ठे

एवी रीते चार चार ज्ञेदे कषाय कहेतां सोल कषायनु वर्णन कर्युं हवे नवनोकषाय कहे ठे जे कषायने सहचारी होय ते नोकषाय

५२-५७जेना उदयथी एक वस्तुनिमित्ते तथा बीजीपर निमित्ते, ए बे प्रकारथी हास्य,रति,अरति, शोक,ज्ञय तथा डुगठानी उत्पत्ति थाय, तेने हास्यषटकरूप पापकर्म कहीए

५८ जेना उदयथी स्त्री ज्ञोगववानी इछा थाय तेने पुरुषवेदरूप पापकर्म कहीये,एनेतृणनाअग्निनीउपमाठे

५९ जेना उदयथी पुरुष ज्ञोगववानी इछा थाय तेने स्त्री वेदरूप पापकर्म कहीए, एने बकरीनी लींडीउंनी अग्निनी उपमा ठे

६० जेना उदयथी स्त्री तथा पुरुष, ए बन्नेने ज्ञोगववानी अज्ञिलाषा थाय, तेने नपुसक वेदरूप पापकर्म कहीए एने नगरदाहनी उपमा ठे

६१-६२ जेना उदयथी तिर्यंचनी गति तथा तिर्यंचनी

६ए-७१ जेना उदयथी चार अशुन्न वर्णादिक एटले कालो रंग अने नीलो रंग, वे अशुन्नवर्ण, डुरन्निगंध, ते अशुन्नगंध, तीखोरस ने कटुकरस, ए वे अशुन्न रस, गुरु, खर, शीत तथा लूखो, ए चार अशुन्न फ रस, ए सर्व मलीने नव अशुन्न थाय, पण सामान्ये चार गणिये एउनी प्राप्ति थाय ठे, तेने अपसन्नवण चउ एटले अप्रशस्त वर्ण चतुष्कनामे पापकर्म कहीए-

७२-७७ जेना उदयथी ठ संघयणमांना प्रथम संघयण विना पांच संघयणनी प्राप्ति थाय ठे, जेना वे पासा मर्कटवध उपर पाटो ए वे होय पण वज्र ते खीली न होय, तेने रुपन्ननाराच कहे ठे, जेने केवल मर्कट वघज होय पण पाटो तथा खीली न होय तेने नाराच कहे ठे, जेने एक पासे मर्कटवघ होय, तेने अर्द्धनाराच कहे ठे, ज्यां मांहोमांहे हाम्कानें एक खीलीनो वध होय, तेने कीलिका कहे ठे. अने जे खीली विना माहोमांहे अमस्तां अम्की रह्या होय, तेने ठेवठु कहे ठे. ए पाच संघयणनी जेणेकरी प्रा प्ति थाय ठे, तेने अपढमसंघयण एटले अप्रथम संघ

विस्तारार्थ –६३ पृथ्वीकायादिक पांच स्थावरनी जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय, तेने इग एटले एकेंद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये

६४ शख प्रमुख जीवोनी जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय तेने वि एटले वेंद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये

६५ जू माकणादिक जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय छे तेने ति एटले तेंद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये

६६ वींछी आदिक जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय छे तेने चउजाईउं एटले चतुरिंद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये

६७ उट अथवा गधेडानी पेठे खराब गतिनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय छे तेने कुखगइ एटले अशुभवि हायोगति नामकर्म कहिये

६८ जेना उदयथी पोतानां जीभ, दांत, हरस, रसोली प्रमुख अवयवे करी पोतेज हणाय छे तेने उवघाय एटले उपघात नामकर्म कहीये

गाथा २० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

थावर=स्थावर.	दुजगाणि=दुर्जाग्य
सुहुम=सूक्ष्म.	दुस्सर=दुःस्वर.
अपज्ज=अपर्याप्त	अणाइज्ज=अनादेय
साहारण=साधारण	अजस=अयश
अथिर=अस्थिर	थावरदसग=स्थावरदशक
असुज=अशुज	विवज्जथ्थ=विपरीतार्थ

थावर सुहुम अपज्जं, साहारण मथिरम सुजदुजगाणि ॥ दुस्सरणाइज्जाजसं, थावर दसगं विवज्जत्थं ॥ २० ॥

शब्दार्थ--स्थावर नामकर्म, सूक्ष्म नामकर्म, अपर्याप्त नामकर्म, साधारण नामकर्म, अस्थिर नामकर्म, अशुज नामकर्म, दौर्जाग्य नामकर्म, दु स्वर नामकर्म, अनादेय नामकर्म, अजश नामकर्म, आ स्थावर दशक (त्रस दशकथी) विपरीतार्थ ठे ॥२०॥

विस्तारार्थ --१ थावर एटले स्थावर नामकर्म ते जेना उदयथी स्थावरपणु प्राप्त थाय तेथी जो तापादिके पीमाय तोपण त्यांथी खशी शकाय नहीं. २ सुहुम एटले सूक्ष्म नामकर्म ते जेना उदयथी दृष्टिने अगोचर एवा सर्व लोकमां व्यापी रहेला सूक्ष्मपणानी

यणरूप नामकर्म कहीए

३५-७४ जेना उदयथी छ सस्थानमाना पहेला सं स्थान विना बीजा पांच सस्थाननी प्राप्ति थाय छे. तिहा जे वडवृक्षनी पेठे नाभिनी ऊपर सुलक्षण युक्त, तथा नाभिनी नीचे निर्लक्षणयुक्त होय, तेने न्यग्रोध परिमंडल सस्थान कहे छे, जे नाभिनी नीचेनु अग सारु, अने नाभिनी ऊपरनु अग नरसुं होय ते तेने सादि सस्थान कहे छे, उदर प्रमुख लक्षणोपेत अने हाथ, पग, माथु, कटी, प्रमाण रहित होय, तेने वामन सस्थान कहे छे, जे हाथ, पग, माथु, कटी प्रमुख प्रमाणोपेत अने उदर प्रमुख हीन होय, तेने कुब्ज सस्थान कहे छे, जे सर्व अवयव अशुभ होय, तेने हुंडक सस्थान कहे छे ए पांच सस्थाननी प्राप्ति थाय छे तेने अपढमसठाणा एटले अप्रथम सस्थानरूप नामकर्म कहीए एवी रीते सर्व मळीने पावस्स एटले पापतत्त्वना ब्याशी प्रकार ते हुति एटले छे १ए

गाथा २० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

थावर=स्थावर.	डूजगाणि=दौर्भाग्य.
सुहुम=सूक्ष्म.	डूस्सर=दुःस्वर.
अपज्ज=अपर्याप्त	अणाइज्ज=अनादेय
साहारण=साधारण	अजस=अयश
अथिर=अस्थिर.	थावरदसग=स्थावरदशक
असुज=अशुभ	विवज्जथ्थ=विपरीतार्थ

थावर सुहुम अपज्जं, साहारण मथिरम सुजडूजगाणि ॥ डुस्सरणाइज्जजसं, थावर दसगं विवज्जत्थं ॥ २० ॥

शब्दार्थ—स्थावर नामकर्म, सूक्ष्म नामकर्म, अपर्याप्त नामकर्म, साधारण नामकर्म, अस्थिर नामकर्म, अशुभ नामकर्म, दौर्भाग्य नामकर्म, दुःस्वर नामकर्म, अनादेय नामकर्म, अजश नामकर्म, आ स्थावर दशक (त्रस दशकथी) विपरीतार्थ ठे ॥२०॥

विस्तारार्थ—१ थावर एटले स्थावर नामकर्म ते जेना उदयथी स्थावरपणुं प्राप्त थाय तेथी जो तापादिके पीडाय तोपण त्यांथी खशी शकाय नहीं. २ सुहुम एटले सूक्ष्म नामकर्म ते जेना उदयथी दृष्टिने अगोचर एवा सर्व लोकमां व्यापी रहेला सूक्ष्मपणानी

प्राप्ति थाय, ते पण पृथिव्यादिक पांचज जाणवा ३ अपज्ज एटले अपर्याप्त नामकर्म कहीए, ते जेना उद यथी स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी कर्या विनाज मरण पामे. ४ साहारण एटले साधारण नामकर्म ते जेना उद यथी अनत जीव वच्चे एक औदारिक शरीरनी प्राप्ति थाय, एवी निगोदावस्था ते ५ अथिर एटले अस्थिर नामकर्म ते जेना उदयथी शरीरमा दतादिक अवयव अस्थिर होय ते ६ असुज्ञ एटले असुज्ञ नामकर्म ते जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अगनो ज्ञाग सारो न होय, पगादिकने स्पर्शे आगलो रोष करे ते ७ दु ज्ञगाणि एटले दुर्ज्ञाग्य नामकर्म ते जेना उदयथी सर्व लोकने अलखामणो लागे ते ८ दुस्सर एटले दु स्वर नामकर्म ते जेना उदयथी कागमादिकनी पेठे कानने कटुक लागे एवा स्वरनी प्राप्ति थाय छे ते ए अणा इज्ज एटले अनादेय नामकर्म ते जेना उदयथी लो कने विषे तेनु बोलवु कोइ मान्य करे नहीं ते १० अज स एटले अयश नामकर्म ते जेना उदयथी लोकमां अपकीर्ति थाय, पण कोइ यश बोले नहीं ते ॥

प्राप्ति थाय, ते पण पृथिव्यादिक पांचज जाणवा. ३ अपज्ज एटले अपर्याप्त नामकर्म कहीए, ते जेना उदयथी स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी कर्या विनाज मरण पामे. ४ साहारण एटले साधारण नामकर्म ते जेना उदयथी अनंत जीव वच्चे एक औदारिक शरीरनी प्राप्ति थाय, एवी निगोदावस्था ते ५ अथिर एटले अस्थिर नामकर्म ते जेना उदयथी शरीरमां दंतादिक अवयव अस्थिर होय ते ६ असुभ एटले असुभ नामकर्म ते जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अंगनो भाग सारो न होय, पगादिकने स्पर्शे आगलो रोष करे ते ७ दुभगाणि एटले दुर्भाग्य नामकर्म ते जेना उदयथी सर्व लोकने अलखामणो लागे ते ८ दुस्सर एटले दुःस्वर नामकर्म ते जेना उदयथी कागडादिकनी पेठे कानने कटुक लागे एवा स्वरनी प्राप्ति थाय छे ते ९ अणाइज्ज एटले अनादेय नामकर्म ते जेना उदयथी लोकने विषे तेनुं बोलवुं कोइ मान्य करे नहीं ते १० अजस एटले अयश नामकर्म ते जेना उदयथी लोकमां अपकीर्ति थाय, पण कोइ यश बोले नहीं ते ॥

एवी रीते आ कह्यु जे थावरदसगं एटले स्थावर दशक, ते पुण्यतत्त्वमां कहेला त्रस दशकथी विवज्जअं एटले विपरीतार्थ जाणी लेवुं ॥ २० ॥

॥ इति पापतत्त्वविचार समाप्त. ॥

गाथा २१ मीना छूटा शब्दना अर्थ

इंदिय=इन्द्रिय	कमा=अनुक्रमे
कसाय=कषाय	किरिआओ=क्रियाओ.
अव्वय=अव्रत.	पणवीस=पचीश
जोगा=योग	इमाउ=आ; ए
पंच=पांच.	ताओ=ते
चउ=चार	अणुकमसो=अनुक्रमे.
तिन्नि=त्रण	

इंदिअ कसाय अव्वय, जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा, किरिआउ पणवीसं, इमाउ ताउ अणुकमसो ॥ २१ ॥

शब्दार्थ.-इन्द्रिय, कषाय, अव्रत अने जोग ते अनुक्रमे पांच, चार, पांच, अने त्रण छे अने क्रियाओ पचीस छे ए सर्वे मलीने आश्रवना बेंतालीश भेद थया. वली क्रियाओ अनुक्रमे आ हवे पछी कहेशे ते जाणवी

विस्तारार्थः—जेम जे मार्गे करी तलावमा पीणी आवे छे, तेने नालु कहिये, तेम जेणे करी आत्माने विषे कर्मोनु आववु थाय छे तेने आश्रव कहीए, ते श्रोत्र, चक्षु, नासिका, जिव्हा तथा स्पर्शन, ए पच एटले पाच इंदिय एटले इंद्रियो छे क्रोध, मान, माया,ने लोभ ए चउ एटले चार कसाय एटले कषाय छे प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान,मैथुन, अने परिग्रह, ए पच एटले पाच अव्वय एटले अव्रत छे. मनोयोग, वचनयोग, तथा काययोग, ए तिन्नि एटले त्रण जोगा एटले योग छे, ए कमा एटले अनुक्रमे सत्तर भेद थया अने किरिआउं पणवीस एटले पचीश पाप क्रियाउं ताउ एटले ते, इमाउ—आ एम वधा मळीने अणुक्कमसो अनुक्रमे आश्रव तत्त्वना बेंतालीस भेद थया.

हवे आश्रव बे प्रकारना छे ते एक द्रव्याश्रव अने बीजो भावाश्रव जीवना जे शुभाशुभ परिणाम ते भावाश्रव कहीए एटले इंद्रियना उपयोग रूप परिणाम तेमज कषाय, अव्रत तथा क्रियारूप परिणाम ते सर्व भावाश्रव जाणवो तथा योग ते मन वचन

अने कायांना आधारभूत कर्म लेवानुं कारण एवुं जे आत्मप्रदेशनुं कंपनपणुं तेने भावाश्रव कहीये तेमज ए भावाश्रवनो निमित्त पामीने तेणे करी जीवने अष्टविध कर्मनो आश्रव थायछे तेने द्रव्याश्रव कहीए

गाथा २२ मीनां छूटा शब्दना अर्थ

काइअ=कायिकी	पाणाइवाय=प्राणातिपातीकी
अहिगरणीया=अधिकरणीकी	आरंभिअ=आरंभिकी.
पाउसिया=प्राद्वेषिकी.	परिग्गहीआ=परिग्रहिकी.
पारितावणी=पारितापनीकी.	मायवत्तिअ=माया मत्यर्यिकी.
किरिया=क्रिया-(ए शब्द बधा नें लगाडवो)	

काइअ अहिगरणीया, पाउसिया पारितावणी किरिया ॥ पाणाइवाया रंभिय, परिग्गहिया मायवत्तीअ ॥ २२ ॥

शब्दार्थ—कायिकी, अधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी, प्राणातिपातिकी, आरंभिकी, परिग्रहिकी, अने मायामत्ययिकी.

विस्तारार्थ—पहेली काइअ एटले कायिकी क्रिया ते कायाने अजयणाए प्रवर्त्तावतां जे क्रिया लागे ते.

बीजी अहिगरणीआ एटले अधिकरणिकी क्रिया ते खङ्गादिक अधिकरणे करी जे जीवोनुं हनन थाय ते. त्रीजी पाउसिआ एटले प्रद्वेषिकी क्रिया ते जीव तथा अजीव उपर द्वेषनी चिंतवना करवी चोथी पारितावणी एटले पारितापनिकी क्रिया ते पोताने तथा परने परिताप जे उपजाववो ते पांचमी पाणाइवाइ एटले प्राणातिपातिकी क्रिया ते एकेंद्रियादिक जीवने हणवो तथा जे हणाववो ते छठी आरम्भिआ एटले आरम्भिकी क्रिया ते खेती प्रमुखनी जे उत्पत्ति करवी अथवा कराववी ते सातमी परिग्गहिया एटले परिग्रहिकी क्रिया ते धन धान्यादिक नवविध परिग्रह मेलवता तथा तेनी उपर मोह करता जे क्रिया लागे ते आठमी मायवत्तीआ एटले माया प्रत्ययिकी क्रिया ते मायाए करी बीजाने ठगवुं ते मूलमां जे किरिआ एटले क्रिया शब्द छे ते उक्त प्रकारे सर्व शब्दोने जोडवो २२

गाथा २३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

मिच्छादसणवत्ति=मिथ्यादर्शन मत्ययिकी.
अपचक्काणीअ=अमत्याख्यानीकी
दिठि=दृष्टिकी.
पुठिअ=स्पृष्टिकी.
पाउचिअ=प्रातित्यकी.
सामतोवणीअ=सामतोपनीपातिकी.
नेसथ्यि=नैसृष्टिकी.
साहथ्यि=स्वहस्तिकी

मिच्छादंसणवत्ती, अपच्चक्काणीय दिठि पुठिअ ॥ पाडुच्चिअ सामंतो-वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥ २३ ॥

शब्दार्थः-मिथ्यादर्शन मत्ययिकी, अमत्याख्यानिकी, दृष्टिकी, स्पृष्टिकी, प्रातित्यकी, सामतोपनिपातिकी, नैसृष्टिकी, अने स्वहस्तिकी

विस्तारार्थ –नवमी मिच्छादसणवत्ती एटले मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया ते जिनवचन असद्दहतो थको जे विपरीत प्ररूपणा करतां क्रिया लागे ते दसमी अप्पच्चक्काणीय एटले अप्रत्याख्यानिकी क्रिया ते अविरतिये करी पच्चक्काण कर्या विना जे सर्व वस्तुनी क्रिया लागे

ते अग्यारमी दिठि एटले दृष्टिकी क्रिया ते कौतुकेकरी अश्व प्रमुखने जोवु ते वारमी पुठीअ एटले स्पृष्टिकी अथवा पृछिकी क्रिया ते रागने वशे करीने जे पुरुष, स्त्री, गाय, बलद, वस्त्र प्रमुख सुकुमार वस्तुने स्पर्श करवु तेथी जे क्रिया लागे ते अथवा कोई सदेह उत्पन्न थयाथी पूछवु तेथी जे क्रिया लागे ते तेरमी पाडुच्चिअ एटले प्रातित्यकी क्रिया ते जीव तथा अजीव आश्रयी जे राग द्वेष थायछे, एटले बीजाने घेर हस्ती, घोडा, वस्त्र, भूषण प्रमुख देखी द्वेष धरे जे ए वस्तु एनी पासे केम? एवु चितवी कर्मबध करे ते चौदमी सामतोवणीअ एटले सामतोपनिपातिकी क्रिया ते पोताना अश्व प्रमुखने जोवा माटे आवेला लोकोने प्रशसा करता जोईने हर्ष करवो, अथवा दध, दही, घी, तेल, प्रमुखनु भाजन उघाडु मूक्या थी तेमा जे त्रस जीव आवी पडे ते पदरमी नेसछि एटले नैसृष्टिकी क्रिया ते राजादिकोना आदेश थकी यत्र शस्त्रादिकनु जे आकर्षण करवुं, अथवा शस्त्र, घडावु, वाव्य, कूवानु खनन करावर्वु ते सोलमी साह

न्नि एटले स्वहस्तिकी क्रिया ते पोताने हाथे अथवा श्वानादिक जीवथी तथा शस्त्रादिक अजीवथी जे शशकादिक जीवने मारवु अथवा कोइ पुरुष अत्यत अभिमान करीने क्रोधित चित्तवत थको जे काम पोताना नोकरो करी शके ते काम पोताना हाथथी करे ते ।२३।

गाथा २४ मीना छूटा शब्दना अर्थ

आणवणि=आज्ञापनिकी-आनयनिका
विआरणिआ=विदारणिकी
अणाभोगा=अनाभोगिकी
अणवकंख पचइआ=अनवकांक्षा प्रत्ययिकी
अना=ए सिवाय बीजी.
पओग=प्रयोगिकी
पिज्ज=प्रेमिकी.
दोस=द्वेषिकी
इरिया वहिया=इर्यापथिकी.
समुदाण=समुदानकी.

आणवणि विआरणिआ, अणभोगा अणवकंख पचइआ ॥ अन्ना पओग समुदाण पिज्जदोसेरिआ वहिआ ॥ २४ ॥

शब्दार्थ—आज्ञापनिकी, विदारणिकी, अनाभोगिकी, अनवकांक्षा प्रत्ययिकी, ए विना बीजी ते प्रायोगिकी, समुदानकी, प्रेमिकी. द्वेषिकी, अने इर्यापथिकी.

विस्तारार्थ –सत्तरमी आणवणि एटले आज्ञापनिकी क्रिया ते जे जीव तथा अजीवने काइ आज्ञा करवी अथवा तेउनी मारफते काइ अणाववु ते. अढारमी विआरणिआ एटले विदारणिका क्रिया ते जीव तथा अजीवनु जे विदारण करवु भागवु ते उगणीशमी अणभोगा, एटले अनाभोगिकी क्रिया ते उपयोग विना शून्य चित्ते करी काइ वस्तु लेवी, अथवा मूकवी, तथा उठवुं, बेसवु गमनादिक करवु ते वीसमी अणवकखपचइआ एटले अनवकाङ्क्षाप्रत्ययिकी क्रिया ते आलोक तथा परलोकथी जे विरुद्ध कार्यनु आचरण करवु ते हवे अन्ना एटले पूर्वे वीश कही तेथी बीजी मन, वचन, तथा कायाना योगनु जे दु प्रणिधान तेमा प्रवर्त्तन करवु, पण निवृत्तवु नहीं ते एकवीसमी पउग एटले प्रायोगिकी क्रिया बावीसमी समुदाण एटले समुदानकी क्रिया ते एवु मोटु पाप करे, जे थकी आठे कर्मनु समुदायपणे ग्रहण थइ जाय ते त्रेवीसमी पिज्ज एटले प्रेमिकी क्रिया ते माया तथा लोभवशे जे काइ करवु, एटले प्रेमनां

वचन एवां बोले, के जे थकी रागनी अधिक वृद्धि थाय ते चोवीसमी दोस एटले द्वेषिकी क्रिया ते क्रोध तथा मानवके एवां गर्वित वचन बोले, के जे थकी आगलाने द्वेष उपजे ते पच्चीसमी इरियावहिया एटले इर्यापथिकी क्रिया ते केवल काययोगनुं जे प्रवर्त्तावबुं तेणे करी जे क्रिया लागे ते इरियापथिकी क्रिया अप्रमत्त साधुने तथा केवलीने पण होय एटले केवलीने केवल काय योगथी उपजे ठे, तथा समिति प्रमुख साचवतां पण साधुने दोषनुं पडिक्कमवुं ते पण इर्यापथिकी क्रिया ॥ २४ ॥

ए पच्चीस क्रियानुं स्वरूप कहे ठे

१ कायिकी क्रिया एटले कायाये करी जे थाय ते.

२ अधिकरणकी क्रिया एटले जीव पोताना आत्माने नरकादिकमा जवाने वास्ते अधिकारी करे ते.

३ प्रदोष क्रिया एटले जेमा प्रकर्षे अधिक दोष एटले द्वेष होय ते

४ पारितापनिकी क्रिया ते जीवने परिताप आपवाथी उत्पन्न थाय जे क्रिया ते.

५ प्राणातिपातिकी क्रिया एटले प्राणीउंने विनाश करवानी क्रिया

६ आरंभिकी क्रिया एटले पृथिव्यादिक ७ कायने उपघात करवानुं जे क्रियामा लक्षण होय ते

७ परिग्रहिकी क्रिया एटले विविध उपाये करी धन उपार्जन करवामा तथा धन रक्षण करवामा जे मूर्छाना परिणाम तेथी उत्पन्न थयेली जे क्रिया ते

८ माया प्रत्ययिकी क्रिया एटले माया छे प्रत्यय एटले हेतु जेनी, एटले मायानी जिहा प्रधान प्रवृत्ति छे ते

९ मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया एटले मिथ्यात्व ज छे प्रत्यय एटले कारण जेनु ते

१० अप्रत्याख्यानिकी क्रिया एटले संयमना विघात कारक जे कषाय,तेना उदयथी प्रत्याख्याननु नकरवुते-

११ दृष्टिकी क्रिया ते रागादि कलुषित चित्ते करी जे जीव, अजीवनु देखवुं ते

१२ स्पृष्टिकी क्रिया एटले राग द्वेष अने मोह स

युक्त चित्ते करीने जे स्त्री आदिकना शरीरनो स्पर्श करवो ते

१३ प्रातित्य प्रत्ययिकी क्रिया एटले पूर्वे अंगीकार करेलां पापना उपादान कारणरूप जे अधिकरण, तेनी अपेक्षाये जे क्रिया उत्पन्न थाय ते

१४ सामतोपनिपातिकी क्रिया एटले (समतात् के०) सर्व दिशाउथी (उपनिपात के) आववु एटले जे स्थानमां भोजनादिकने लीधे सर्व दिशाउथी स्त्री आ दिक जीवोनु आववु थाय ते

१५ नैसृष्टिकी क्रिया एटले जे परोपदेशित पाप मां घणो काल प्रवर्त्ते, ते पापनी भावथी अनु मोदना करे ते

१६ पोताना हाथथी जे करे ते स्वहस्तिकी क्रिया

१७ आज्ञापनिकी क्रिया एटले श्री अर्हंत भगवा-ननी आज्ञा उल्लघन करी पोतानी बुद्धिथी जीवाजी-वादि पदार्थोनी प्ररूपणाद्वारा जे क्रिया ते

१८ वैदारणिकी क्रिया ते बीजाना अछता माठा आचरणने प्रकाश करी तेनी पूजानो नाश करवो

तेथी उत्पन्न थएली जे क्रिया ते

१९ अनाभोगिकी क्रिया एटले (आभोग के०) उपयोग ते थकी जे विपरीत होय, तेने अनाभोग कहिये, तेणे करी उपलक्षित जे क्रिया ते

२० अनवकाङ्क्षा प्रत्ययिकी क्रिया एटले पोतानी तथा पारकी जे अपेक्षा करवी, तेनु नाम अवकाङ्क्षा छे, ते थकी जे विपरीत होय, तेने अनवकाङ्क्षा कहीये तेज छे प्रत्यय एटले कारण जेनुं एटले परमेश्वरे कहेली जे करवा योग्य विधियो, ते विधियो माहेली कोइ कोइ पण विधियो पोताने अथवा कोइ परजीवने हितकारी छे, ते विधियोमा प्रमादना वशथकी अनादर करवो ते

२१ प्रयोगिकी क्रिया एटले प्रयोग ते एकतो दोडवु, चालवुं, इत्यादि कायानो व्यापार, बीजु हिंसाकारी कठोर जुठादिक बोलवु, ते वचननो व्यापार, त्रीजो पराभिद्रोह इर्ष्या अभिमानादिक मननो व्यापार, ए त्रणनु जे करवु ते.

२२ समुदान क्रिया एटले जेणे करी विषय ग्रहण

करीये, ते समादान इंद्रिय छे, तेनो जे देशथी अथवा सर्वथी उपघातरूप व्यापार ते

२३ प्रेम एटले माया अने लोन्न तेणे करी जे थाय, ते प्रेम प्रत्ययीकी क्रिया

२४ द्वेष एटले क्रोध, अने मान, तेणे करी जे थाय ते द्वेष प्रत्ययिकी क्रिया

२५ चालवाथी जे क्रिया थाय ते ईर्यापथिकी क्रिया ए क्रियाउं माहेली केटलीएक क्रियाउं आपसमां सरखी देखाय छे, तोपण सरखी समजवी नहीं.

ए पच्चीस क्रियाउं कही, ते पूर्वे कहेला सत्तरन्नेदो साथे मेलवता आश्रवतत्त्वना बेंतालीस न्नेद थाय.

॥ इति आश्रवतत्त्व समाप्तम् ॥

गाथा २५ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

समिइ=समिति.	चरित्ताणि=चारित्र
गुत्ति=गुप्ति	पण=पाच
परीसह=परिसह.	ति=त्रण
जइधम्मो=यतिधर्म	इविस=बावीस
न्नावणा=न्नावना.	दस=दस.

बार=बार	ज्ञेएहिं=ज्ञेदोए करीने
पच=पाच	सगवन्ना=सत्तावन

समिई गुत्ति परीसह, जइधम्मो न्नावणा चरित्ताणि ॥ पण ति डुवीस दस बार, स पचन्नेएहिं सगवन्ना ॥ २५ ॥

शब्दार्थ'–समिति, गुप्ति, परिसह, यतिधर्म, न्नावना, अने चारित्र ते अनुक्रमे पाच, त्रण, बावीस, दस, बार अने पाच एवा ज्ञेदोए करीने संवरना सत्तावन ज्ञेदो ठे ॥ २५ ॥

विस्तारार्थ –जे वमे नवा कर्मो आवता रोकाय तेने संवर कहे ठे, तेना बे ज्ञेद ठे एक ऊव्य सवर अने बीजो न्नावसवर तेमा नवा कर्मोनु जे रोकावबु तेने ऊव्य सवर कहिये, अने समिति प्रमुखपणे करी परिणामने पाम्युं जे शुद्ध उपयोगरूप ऊव्यपणु, तेथी न्नावकर्मना रोधक आत्माना परिणाम थाय ठे, तेने न्नाव सवर कहिये तिहा सम्यक् प्रकारे जे चेष्टा करवी, तेने समिइ एटले समिति कहिये ते पण एटले पाच ठे योगनु जे गोपन करवु, तेने गुत्ति एटले गुप्ति क-

हिये, ते ति एटले त्रण छे, सर्व प्रकारे निर्जराने अर्थे जे सहन करवु, तेने परीसह एटले परिसह कहिये, ते दुवीस एटले बावीस छे यतिने जे अवश्य आचरवा योग्य होय, तेने जइधम्मो एटले यतिधर्म कहिये ते दस एटले दस छे मननी चंचलता निवारण करवाने जे भाववुं, तेने भावणा एटले भावना कहिये ते बारस एटले बार छे कर्मक्षय थवाने अर्थे अहिंसादिक परिणामे करी जे यत्नादिकनु आचरवु तेने चरित्ताणि एटले चारित्र कहिये ते पच एटले पांच छे एवी रीते सगवन्ना एटले सत्तावन भेएहि एटले भेदे करी संवरतत्त्व जाणवो ॥ २५ ॥

गाथा २६ मीना छूटा शब्दना अर्थ

इरिया=इर्यासमिति	मु=भली
भास=भाषासमिति	अ=अने-वली
एसणा=एषणासमिति.	मणगुत्ति=मनगुप्ति
आदाणे=आदान निक्षेपणा समिति	वयगुत्ति=वचनगुप्ति
उच्चारे=पारिष्ठापनिका समिति.	कायगुत्ति=कायगुप्ति
समिइ=समिति.	तहेवय=तेमज.

इरिया ज्ञासेसणादाणे, उच्चारे समिईसु ञ्र
मणगुत्ति वयगुत्ति, कायगुत्ति तहेव य ॥२६॥

शब्दार्थ —इर्यासमिति, जाषासमिति, एषणासमिति, आदाननिक्षेपणासमिति, उच्चारसमिति ए पाच समिति वली मनगुप्ति, वचनगुप्ति तेमज कायगुप्ति, ए त्रण गुप्ति जाणवी

विस्तारार्थ.—गाथाना पूर्वार्धे करी पाच समितिनु वर्णन करे छे समिति एटले सम्यग् चेष्टा तेमा,

१ पहेली इरिया एटले इर्यासमिति ते जयणा राखी उपयोग सहित धूसरा प्रमाण जूमिका दृष्टिए जोइने जे चालवानी चेष्टा करवी ते

२ बीजी जास एटले जाषासमिति ते सम्यक् प्रकारे निरवद्य जाषा बोलवारूप जे चेष्टा करवी ते

३ त्रीजी एसणा एटले एषणासमिति ते सम्यक् प्रकारे बेतालीस दोष रहित निर्दोष आहार, वस्त्र, पात्र, वसति, सबधी जे जिक्षानी गवेषणा करवी, तेनी जे चेष्टा ते

४ चोथी आदाणे एटले आदाननिक्षेपण समिति ते सम्यक् प्रकारे पुजी, प्रमार्जी, आसन प्रमुखनुं

आदान एटले ग्रहण करवानी जे चेष्टा करवी, तथा तेने निक्षेप एटले त्याग करवानी जे चेष्टा करवी ते. आ ठेकाणे मूलमा आदान शब्द छे ते कहेवाथी निक्षेपण शब्द पण साथे लेवो. जेम भीम शब्द कहेवाथी भीमसेन समजाय छे तेम अहीया पण जाणी लेवुं

५ पांचमी (उच्चारे के०) उच्चार एटले मलमूत्रादिक तेने परठववु माटे पारिष्टापनिका समिति, ते परठवा योग्य जे मलमूत्रादिक वस्तु, तेनु स्थण्डिल भूमिकाने विषे उपयोग पूर्वक जे मूकवानी चेष्टा करवी, तथा सदोष उपकरणादिकने परठववानी चेष्टा करवी ते. एवी रीते ए पांच समिइ एटले समिति ते सु एटले भली परिवृत लक्षण जाणवी, अ एटले हवे गाथाना उत्तरार्धवमेत्रणगुप्तिनुवर्णनकरेछे. प्रथम (मणगुत्तिके०) मनगुप्तिएटले मननुं गोपन करवु,तेना त्रण भेद छे – तेमां अपध्याने करी उत्पन थएली कल्पना जालनो जे वियोग, ते पहेलो भेद धर्मध्याने करी मध्यस्थ पणानी जे परिणति, ते बीजो भेद. अने सर्वथा म-

नोयोग रोकायाथी तेरमा गुणठाणाना अंतने विषे जे आत्मारामता थाय छे, ते त्रीजो न्नेद जाणवो. वीजो (वयगुत्ति के०) वचनगुप्ति एटले वचननु गोपन करवुं तेना वे न्नेद छे -सर्वथा वचननो रोध करवाने अर्थे मौननो अन्निग्रह धारण करीने हाथ प्रमुखनी सङ्गा वमे कार्य करवु ते पहेलो न्नेद अने मौननो अन्निग्रह धारण नहीं कर्यो छता याचना प्रमुख कार्य करती वेलाए मुखे मुहपत्ति देइने जे जयणाथी वोलवु, ते वीजो न्नेद जाणवो, इहा न्नाषा समितिमा तो केवल जयणाये वोलवानुज कह्यु छे, अने एमा तो एक सर्वथा वचननो रोध करवो अने वीजु जयणाये वोलवुं, ए जुदा जुदा वे स्वरूप देखाड्या छे ए उपरथी वचनगुप्ति अने न्नाषासमिति एवंमा ए अंतर छे, एम जाणवु अने तहेव एटले तेमज त्रीजी[कायगुत्ति के०] कायगुप्ति एटले कायानु गोपन करवु तेना पण वे न्नेद छे - उपसर्ग परिसह आवी उत्पन्न थवाथी पण जे काया स्थिर राखवी, अथवा चौदमे गुणठाणे योग निरोधावस्थाये सर्वथा शरीरनीचेष्टानो त्याग करवो,

ते पहेलो भेद, अने शयन, आसन प्रमुखने विषे सू-
त्रोक्त विधिये करी चेष्टानो नियम करवो एटले माथा
तले हाथ घाली, गूढण संकोची, कूकडीनी पेठे पग
पसारीने सूवुं ते बीजो भेद जाणवो ए समिति
अने गुप्तिना अर्थमा आटलु विशेष छे, के सम्यक् प्र-
कारे चेष्टारूप जे प्रवृत्ति करवी, ए समितिनु लक्षण
छे. अने शुभस्थानने विषे प्रवृत्ति करवी, तथा अशुभ
स्थानथी निवर्त्तवु, एम प्रवृत्ति तथा निवृत्तिरूप गुप्ति
नु लक्षण छे ए पांच समिति अने त्रण गुप्ति मली
आठ प्रवचन माता कहेवाय छे ते चारित्ररूप शरीर
ने उपजाववा तथा तेनु पालण पोषण करवा माटे
माता समान छे ॥ २६ ॥

गाथा २७ मीना छूटा शब्दना अर्थ

खुहा=क्षुधापरिसह; भुख
पिवासा=पिपासा, तरस
सी=शीत–टाढ
उण्ह=उष्ण, ताप
दसा=दंश.
अचेल=अचेलक, वस्त्ररहितपणुं
अरइ=अरति, पीडा.
इथ्थियो=स्त्री.
चरिआ=चर्या, चालवुं
निसिहिया=नैषेधिकी

सिज्जा=शय्या | वह=वध
अकोस=आक्रोश | जायणा=याचना

खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेला रई त्थिजे ॥ चरिआ निसिहिया सिज्जा, अकोस वह जायणा. ॥ २१ ॥

शब्दार्थ –क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, दंस, अचेल, अरति, स्त्री, चर्या, निपद्या, शय्या, आक्रोश, वध अने याचना (परिसह)-

विस्तारार्थ –हवे परिसह शब्दनो अर्थ कहे छे, जे जैन मार्गने नहि मुकवाने अर्थे तथा कर्मनी निर्जरा करवाने अर्थे दु खोने परि एटले समस्त प्रकारे सह एटले सहन करवु पडे तेने परिसह कहीये, व्याकरणमा लख्यु छे के, " परिसहतीति परिसह ' ते परिसह सर्व मली बावीस छे, तेमा दर्शन परिसह अने प्रज्ञा परिसह जैनमार्ग न मुकवाने अर्थे छे, अने बाकी वीस परिसह कर्म निर्जरा करवाने अर्थे छे ए बावीस परिसहोना अर्थ सहित नाम तथा अनुक्रम ते परिसहोने कहेवाना कारण कहे छे

१ खुहा एटले क्षुधा परिसह छे क्षुधा एटले भूख

अने तेथी उत्पन्न थनारी वेदना सर्व वेदनाउथी अधिक छे, कारण के जूख आंतरमां अने पेटने बालनारी छे, हवे साधु मुनिराजने गमे तेवी जूख लागे, तोपण तेउ अनेषणीय आहार ले नहिं, अने आर्त्त ध्यान पण करे नहिं परंतु रूमे परिणामे तुख सहन करे आ कुधा सहन करवी घणीज दुर्लभ छे माटे सर्व परिसहोमां ए कुधा परिसह पहेलो गएयो छे.

२ पिवासा एटले पिपासा परिसह छे ते पहेलां कहेली कुधानी पीमा मटामवा सारु उचा नीचा घरोने विषे विहार करवो पमे तेना श्रमे करीने तरस उत्पन्न थाय, माटे कुधा पछी बीजो पिपासा परिसह गएयो छे अहिं साधु प्रासुक एषणीय जलने अन्नावे तरसथी आकुल व्याकुल थएलो छतो पण अनेषणीय शीतल जलादिकनी इछा करे नहिं परतु सम्यक् प्रकारे तृषा सहन करे.

३ सी एटले शीतपरिसह ते जूख अने तरसथी पीमाएलाने शीतपणु थाय माटे त्रीजो शीतपरि

सह गण्यो छे तिहां शीतकालने विषे ज्यारे टाढ पडे त्यारे कल्पनीय वस्त्रने अभावे गृहादिके रहित एवो पण अकल्पनीय वस्त्रनी इछा करे नहिं पोते अग्नि प्रदीप्त करी तापे नहि, तेमज बीजाए सलगावेला अग्निथी पण तापे नहिं परतु अल्पजीर्ण वस्त्रोए करी सारी रीते टाढने सहन करे

४ उसह एटले उष्ण परिसह, ते उष्ण ऋतु जे छे, ते पूर्वोक्त शीत ऋतुनी विपक्षीभूत छे, माटे शीत पछी चोथो उष्ण परिसह गण्यो छे तिहां उष्ण कालने विषे रह्यो छतो सूर्यनु प्रतिबिंब माथे आवे,एवा मध्याह्न समये अत्यत आतापना थए थके पण छत्रनी अथवा लुगडानी छायाने तथा विंजणा प्रमुखना वायुने अण वाछतो थको तेमज स्नान विलेपनादिकने नहिं करतो एवे प्रकारे आतापना सहन करे

५ दसा एटले दसपरिसह, ते पूर्वोक्त उष्णकाल पछी वर्षाकाल आवे, ते वखते डांस मछरादिक बहु थाय, माटे उष्ण पछी पांचमो दश परिसह गण्यो

ठे तिहां रूशादि जू, मांकरू इत्यादिक क्षुद्र जीवो जेम संग्राममां शत्रु बाणनो प्रहार करे तेम मंख मारे, तोपण तेउंना उपद्रवथी ते स्थानक तजीने अन्य स्थानके जाय नहि, अथवा तेने निवारवा सारु पखो करवानी इछा पण करे नहीं,तथा ते मंसादिक जीवो पोतानुं लोही पीये, तोपण तेना उपर द्वेष करे नहीं, एवी रीते सम्यक् प्रकारे मंश परिसह सहन करे.

६ अचेल एटले अचेलक परिसह, ते पूर्वोक्त रूशादिके पराजव पाम्यो थको पण वस्त्रने वाठे नहीं, तेथी अचेलक परिसहने ठठो गण्योठे अचेलक एटले शुं? तो के चेल एटले वस्त्र तेनो अ एटले अजाव ते अचेलक जाणवो अहींयां सर्वथा वस्त्रोनो अजाव होय तेनुंज नाम अचेल परिसह नथी. परतु आगममां जे, जे वस्त्रो राखवानु प्रमाण कह्युं ठे, ते प्रमाणें राखे तो तेने अचेलक परिसह कहेवो हवे त्यां शका करे ठे, के जो कांइ पण वस्त्र राखे तोपण ते परिग्रहज कहेवाय ? त्यां कहे ठे, के जो मूर्छा सहित वस्त्र राखे

तो परिग्रह कहेवाय, परंतु मूर्च्छा रहित अपरिग्रहपणाये शास्त्रोक्त रीते राखे. तो अचेलक जाणवो तिहां साधुने फाटेलु अल्प मूल्यनुं अने जूनु वस्त्र छतां कल्पनीय वस्त्र न मले तथापि मनमा दीनता न करे, वली एम पण न विचारे के आज काल कोइ नवा वस्त्रनो आपनार पण मलतो नथी, माटे हवे केम करवु? अथवा आ वस्त्रो तो समेला अने जूनां छे, माटे बीजा नवा पहेरु, एवो विचार पण न करे ए प्रमाणे सम्यक् रीते अचेलक परिसह सहन करे.

७ अरइ एटले अरति परिसह ते पूर्वोक्त अचेलक अप्रतिबद्ध विहारी छता तेने शीतादिकना सद्भावे करी अरति उपजे, माटे अचेलक पछी सातमो अरति परिसह गण्यो छे, तिहा जे रमण करवु ते रति अने तेथी विपरीत जे अरमणिकता ते अरति जाणवी. आ ठेकाणे साधुने संयममा विहार करतां अरति उपजवाना कारण बने, त्यारे धर्मने विषे रक्त थाय; क्षात्यादिक दस प्रकारना यति धर्मने ध्यावे, श्री दश-

वैकालिकनी प्रथम चूलिकामां अढार वस्तुनुं चिंतवन करवाथी अरति दूर थाय छे, ते प्रमाणे चितवन करी अरति दूर करे

८ इत्थि एटले स्त्रीपरिसह. ते पूर्वोक्त सयमने विषे अरति उत्पन्न थवाथी स्त्री निमत्री तेनो अभिलाषा करे, माटे अरति पछी आठमो स्त्रीपरिसह गण्यो छे तिहां स्त्रीयोने दीठा थका तेनां अग, प्रत्यग, सस्थान सुरति, हसवुं, मनोहरपणु ललित विभ्रमविलासादिक चेष्टाउने अणचितवतो थको रहे, स्त्रीयोने मोक्ष मार्गमां अर्गला समान जाणी, तेने कामबुद्धिये करी दृष्टि साथे दृष्टि मेलवी जुवे नही, ते स्त्री परिसह

९ चरिआ एटले चर्या परिसह चर्या एटले चालवानु नाम छे तिहा एक स्थले रहेतां मद सत्वने पूर्वोक्त स्त्री उपर अनुराग थाय, ते माटे एक स्थानके न रहे, तेथी ए स्त्री परिसह पछी नवमो चर्या परिसह गण्यो छे तिहां आलस रहित थका ग्राम, नगर

कुलादिकने विषे विहार करवो, तेने द्रव्यथी चर्या कहीये अने जो एकस्थानके मास कल्पादिके रहेता पण अप्रतिबद्ध ममत्व रहितपणु अंगीकार करवुं ते भावथी चर्या कहीये

१० निसिहिया एटले नैषेधिकी परिसह ते पूर्वोक्त ग्रामादिकने विषे जेम अप्रतिबद्ध विहार करवो, तेम देहादिकने विषे पण अप्रतिबद्ध स्वाध्यायने अर्थे नैषेधिकी करवी, ते माटे चर्या पछी दसमो नैषेधिकी परिसह गण्यो छे जे निषेधिये तेने नैषेधिकी कहीये तिहां एक पापकर्म, बीजु गमनागमन, तेहीज निषेध करवानु छे प्रयोजन जेनु तेने नैषेधिक कहीये अहियां शून्य घर श्मशानादिक सर्प बिल सिंह गुफादिकने विषे कायोत्सर्गे रह्या थका तिहां नाना प्रकारना उपसर्गना सद्भावे पण अशिष्ट चेष्टानो निषेध करवो, अर्थात् माठी चेष्टा न करवी, तेने नैषेधिकी परिसह कहीये अथवा कोइ ठेकाणे निषद्या परिसह पण कह्यो छे, ते निषद्या एवु रहेवाना स्था-

नकनुं नाम छे, त्यां स्त्री, पशु पंडक वर्जित स्थानमां रहेतां थकां जो इष्टानिष्ट उपसर्ग थाय, तोपण पोताना चित्तमां चलायमान न थाय, परंतु ते सर्व उपसर्गने उद्वेग रहितपणे सम्यक् रीते सहन करे ते नैषेधिकी अथवा निषद्या परिसह

११ सिज्जा एटले शय्या परिसह ते पूर्वोक्त नैषधिकीये स्वाध्याय करी, शय्याये आवे, माटे, अगीयारमो शय्या परिसह गण्यो छे जेने विषे शयन करीये तेने शय्या कहीये, तिहां शय्या ते वसति, उपाश्रये उंची नीची भूमि होय, अथवा कठिन आसन पामीने तेने सारु अथवा मातु कहे नहीं, उद्वेग करे नही, परतु रुडे प्रकारे ते दुःखने सहन करे, ते शय्या परिसह

१२ अक्कोस एटले आक्रोश परिसह ते पूर्वोक्त शय्याये रहेलाने शय्यातर एटले शय्याना आपनार अथवा बीजो आक्रोश करे, माटे शय्या पछी बारमो आक्रोश परिसह गण्यो छे ते एवी रीते के, क्रोधने

वश थएलो कोइ अज्ञानी पुरुष कोइ यतिने तिरस्कारना वचन बोले, तेने देखी तेनी उपर दृढ प्रहारीनी पेरे कोप करे नहि, परतु एवुं विचारे के आ पुरुष, खराने वास्ते मने अनिष्ट वचन कहेछे, ए महारो उपकारी छे कारण के मने ते आ प्रमाणे शिखामण आपे छे, तेथी हुं एवु काम फरीथी करीश नहीं अथवा ते पुरुष जे कहे छे ते हु करतो नथी, तथापि महारे एनी उपर कोप करवो ते युक्त नथी, एम चिंतवी क्रोध न करे एम सम्यक् रीते आक्रोश सहन करे.

१३ वह एटले वध परिसह ते पूर्वोक्त आक्रोशनो करनार जे होय, ते वध पण करे, माटे आक्रोश पछी तेरमो वधपरिसह गएयो छे, तिहा कोइ दुरात्मा आवीने साधुने ढींका, पाटु, चाबक, कशादिकना आकरा प्रहार करे, अथवा वध करे, तोपण खधकसूरिना शिष्योनी पेठे तेना उपर बिलकुल रोष आणे नहि, परतु अकलुषित चित्तवत थको एवी चितवना करे, के ए महारु शरीरतो पुद्गलरूप छे, एतो अवश्य नाशवत छे,

अने मारो आत्मा तो ए थकी जुदोज छे, कारण के आत्मानो तो कोइ नाश करी शकेज नहि तो आ शरीरना संबधथी मने जे दुःख थाय छे, तेतो मारां करेलां कर्म उदय आव्यां छे, तेनु ए फल छे एवी रीते वध परिसहने सहन करे

१४ जायणा एटले याचना परिसह. ते पूर्वोक्त उपरथी हणाणाने औषधादिकनी याचना करवानुं प्रयोजन थाय, माटे वध पछी चौदमो याचना परिसह गण्यो छे जे बीजा पासेथी याचीये तेने याचना कहीये ते आ प्रमाणे.–

यतिये वस्त्र, पात्र, अन्न, पान, उपाश्रय, प्रमुख कोइ पण चीज अर्थात् एक शली जेटली चीज पण माग्या विना लेवी नहि तो पण पोतानी शोभा राखवाने अर्थे मागे नहि, तथापि पोतानु प्रयोजन होय त्यारे लज्जा टाळीने याचना करे परतु रांधेला धान्यने अर्थे भला माणसने घेर जइ याचना करवी एवुं चितवे नहि. ते करतां तो गृहस्थावासमां रहेवुं

ज नहु, के ज्यां आपणा भुज दंडना पराक्रमथी उपजाव्यु जे अन्न, ते दीनहीनादिकने आपी, पछी जमीये, एवी विचारणा करीने गृहस्थपणाने इच्छे नहिं, अथवा याचना करतां कोइ आपशे किंवा नहिं आपशे ? तो हुं आ गृहस्थने घेर जइ लाजनो मर्म गमावीने शी रीते याचना करुं ? इत्यादिक चिंतवना न करता याचना करे ॥ २७ ॥

गाथा २८ मीना छूटा शब्दना अर्थ

अलाभ=अलाभ
रोग=रोग
तणफासा=तृणस्पर्श
मल=मल
सक्कार=सत्कार
परीसहा=परिसह (ए शब्द बधाने लगाडवो)
पन्ना=प्रज्ञा
अन्नाण=अज्ञान
सम्मत्त=सम्यक्त्व
इअ=ए प्रकारे
बावीस=बावीस
परीसहा=परिसह

अलाभ रोग तणफासा, मल सक्कार परीसहा ॥ पन्ना अन्नाण सम्मत्त, इअ बावीस परीसहा ॥ २८ ॥

शब्दार्थः—अलाभ, रोग, तृणस्पर्श. मल, सत्कार, प्रज्ञा, अज्ञान, अने सम्यक्त्व ए प्रकारे बावीस परिसह जाणवा.

विस्तारार्थ—१५अलाभ एटले अलाभ परिसह ते पूर्वोक्त याचना कर्यां छतां पण लाभांतरायना उदयथी माग्यां छतां पण मले नहीं, माटे याचना पछी पदरमो अलाभ परिसह गण्यो छे ते आ प्रमाणेः—साधुने कोइ पण चीजनी इच्छा होय अने ते वस्तु गृहस्थना घरमां पण घणीज होय पण ज्यारे ते मागवा जाय छतां गृहस्थ आपे नहि त्यारे ढढण कुमारनी पेठे उद्वेग करे नहीं, विषाद न करे मुखराग फेरवे नहीं, न आपनारनु मातु चिंतवे नहि, दुर्वचन बोले नहीं अने समता धारण करी विचार करे के आज नहि मल्युं तो काले मलशे ज्यारे मलशे त्यारे लइशुं ए प्रमाणे अलाभ परिसह सहन करे

१६ रोग एटले रोग परिसह ते पूर्वोक्त अलाभ थकी आतप्रात भोजने करी रोगनी उत्पत्ति थाय, माटे अलाभ पछी सोलमो रोग परिसह गण्यो छे.

तिहां साधुने ज्यारे कास, श्वास, ज्वर, अतिसारादिक रोग उत्पन्न थाय, त्यारे जे गछबाहिर जिनकल्पी साधु होय, ते तो चिकित्सा करवानी इछा पण करे नहीं, अने पोताना कर्मनो विपाक चिंतवे, परतु स्थविरकल्पी गछवासी साधु तो आगममां कहेला विधिये करी निरवद्य चिकित्सा करावे मनमां कर्म विपाक चिंतवतो रहे, पण हायवोय करे नहीं, जो अत्यत वेदना थती होय, तो पण आर्त्तध्यान करे नहि परतु सनत्कुमारनी पेठे रुडी रीते वेदना सहन करे

१७ तण फासा एटले तृणस्पर्श परिसह ते पुर्वोक्त रोगीने शय्यामा सूता थका तृणस्पर्श थाय, माटे रोग परिसह पठी सत्तरमो तृणस्पर्श परिसह गण्यो छे तिहा गछनिर्गत साधुने तृणनाज सथारो कह्योछे, पण गछवासी साधुने तो सापेक्ष सयम थाय छे, माटे ते वस्त्र पण लेछे परतु ज्यारे जमीन भीनी होय अथवा वस्त्र जुनु थयु होय अथवा चोरे

चोरी लीधुं होय, त्यारे माजनो अढी हाथ प्रमाण संथारो करे पण तृणना अग्रभाग तीखा होय, ते शरीरने लागे, तेथी पीडा उत्पन्न थाय तो पण दु:ख चितवे नहि अने समाधिनो त्याग पण करे नहीं

१८ मल एटले मल परिसह, ते पुर्वे कहेला तृण स्पर्शे करी परसेवाने सयोगे मल उपजे, माटे तृण पछी अढारमो मल परिसह गण्यो छे अहींयां परसेवाना पाणी वडे साधुना शरीरमां रजनो कठिण मेल बधाइ जाय, ते मेल उष्णकालनां ताप वडे परसेवाथी भीजाइने दुर्गंधे गधाय, तो पण ते दुर्गंधताने दूर करवा सारु स्नानादिकनी इछा करे नहीं वली ए थकी क्यारे हु मुक्त थइश एवी चिंतवना पण करे नहीं

१९ सकार एटले सत्कार परिसह ते पुर्वोक्त मल व्याप्त पुरुष, कोइ पवित्र अगवालानो सत्कार थतो देखी कांइक पोते पण सत्कारादिकनी वांछा करे,

माटे मल पठी उंगणीसमो सत्कार परिसह गण्यो छे ते आ प्रमाणे.—साधुने कोइए स्तवन, नमन, चरणस्पर्श, सन्मुख जवु, उभु थावु, आसन देवुं, अशनादिकनु दान देवु, अथवा कोइ मोटा राजादिके निमंत्रणादिकनु करवुं, एवो सत्कार पोताने थतो देखीने मनमा हर्ष आणे नहि, अने सत्कार न थवाथी मनमा खेद पण पामे नहीं

२० पन्ना एटले प्रज्ञा परिसह ते पूर्वोक्त सत्कारना जयथी प्रज्ञाने वाहूल्ये गर्व न करवो तेमज प्रज्ञाने अभावे खेद पण करे नहीं माटे सत्कार पठो वीसमो प्रज्ञा परिसह गण्यो छे, ते आ प्रमाणे —जेणे करी वस्तुनु तत्त्व (प्र) एटले प्रकर्षे करी (ज्ञ) एटले जणाय, तेने प्रज्ञा कहिए, ते प्रज्ञावत साधु, घणा श्रुतनो जाण छता में भवातरने विषे रुडी रीते ज्ञान आराधन कर्युं छे, माटे हु समस्त मनुष्योमा जाण छु, सर्वेना पूछेला प्रश्नोना उत्तर हु आपुछु ? एवो गर्व न करे, अने प्रज्ञाने अभावे मनमा उद्वेग पण न करे, ते

एमके, हु मूर्ख छुं, कांइ पण जाणतो नथी, सर्वने पराभवनुं स्थानक छु, कोइए पूछयां थकां जीवादि पदार्थनां नाम पण जाणतो नथी, एवी दीनता मनमा न करे, परंतु पूर्वे करेला कर्मनुं स्वरूप चिंतवे, तो परिसह पीडे नहि.

२१ अन्नाण एटले अज्ञान परिसह-ते पूर्वोक्त प्रज्ञानीपेरे अज्ञान पण सहन करवु, माटे प्रज्ञा पछी एकवीशमो अज्ञान परिसह गण्यो छे. श्रुतज्ञानथी वस्तुनु तत्त्व जणाय छे, अने तेनो जे अभाव ते अज्ञान परिसह कहीए ते आवी रीते -साधु मनमां एम न जाणे, जे मे अव्रतिपणु त्यागीने व्रतिपणु अंगीकार कर्युं छे, तोपण हु कांइ पण जाणतो नथी, तेमज में भद्रा महाभद्रादिक तप पडिवज्यां तथा उपधान जे आयंबिल प्रमुख अने मासिकादिक प्रतिमा वही, एवी रीते कियाये हुं चालुछु, तो पण हुं सारु मातुं कांइ जाणतो नथी केमके हु आगम ज्ञान रहित छुं, माटे निरक्षर कुर्दिभर एवा मने धिकार छे. एवी दीनता न करे, परंतु

हवे सात परिसह चारित्र मोहनीयना उदयथी थाय छे, ते कहे छे—

१ क्रोधना उदयथी आक्रोशपरिसह थाय छे.

२ अरति परिसह ते अरति मोहनीयना उदयथी थाय छे

३ पुरुष वेदना उदयथी स्त्रीपरिसह थाय छे.

४ नैषेधिकी परिसह ते भय मोहनीयना उदयथी थाय छे

५ जुगुप्सा मोहनीयना उदयथी अचेलक परिसह थाय छे

६ याचना परिसह ते मान मोहनीयना उदयथी थाय छे

७ लोभ मोहनीयना उदयथी सत्कार पुरुषकार परिसह थाय छे

तथा १ क्षुधा, २पिपासा, ३शीत, ४ उष्ण, ५ दंश, ६ चर्या, ७ शय्या, ८ मल, ९ वध, १० रोग, ११ तृणस्पर्श, ए अगीयार परिसह, वेदनीय कर्मना उदयथी

थाय छे, शेष कर्मोने विषे परिसहनो अवतार नथी. एव वावीस थया.

हवे चौद गुणठाणाने विषे परिसहोने समवतारी देखाडे छे, तिहां ए क्षुधादिक वावीसे परिसह यावत् वादर संपराय नामा नवमा गुणठाणा सुधी थाय छे, अने सूक्ष्म संपराय नामा दसमे गुणठाणे ता पूर्वोक्त चारित्र मोहनीयना क्षयोपशमना प्रतिवधथी तथा सात परिसह तथा एक दर्शन मोहनीय प्रतिवद्ध मलीने आठ परिसह न थाय, शेष क्षुधादिक अनुक्रमे पांच परिसह, ६ चर्या, ७ शय्या, ८ वध, ९ अज्ञान, १० रोग, ११ तृणस्पर्श, १२ मल, १३ प्रज्ञा, १४ अज्ञान, ए चौद थाय छे वली अगीयारमा उपशातमोह अने वारमा क्षीणमोह गुणठाणे पण पूर्वे कहेला चौद परिसहज थाय छे हवे तेरमे सयोगी तथा चौदमे अयोगी ए वे गुणठाणे तो अनुक्रमे क्षुधादिक पाच, ६ चर्या, ७ वध, ८ मल, शय्या, १० रोग, ११ तृण स्पर्श ए अगीयार परिसह मात्र वेद-

नीय कर्मना प्रतिबद्धथी थाय ठे

ए बावीस परिसह मांहेलो शीत अने उष्ण तथा चर्या के० (चालवु) अने निषिद्या के० (रहेवु) ए चारे समकाले वर्ते नहि, परंतु एना प्रतिपक्षी बे परिसह समकाले वर्त्ते, माटे उत्कृष्टथी एक प्राणीने विषे समकाले वीसपरिसहनो उदय थाय, अने जघन्यथी तो शीत अथवा उष्ण तथा चर्या अथवा निषिद्या, ए चार माहेला एकनोज उदय थाय, केमके ज्या शीत होय, त्या उष्ण न होय अने ज्या चर्या होय त्या निषिद्या न होय इत्यादिक माहेलो एक थका बेनो अभाव होय ए परिसह माहेलो एक स्त्री, बीजो प्रज्ञा, त्रीजो सत्कार, ए त्रण परिसह, अनुकूल जाणवा अने शेष उंगणीश परिसह प्रतिकूल जाणवा. वली स्त्री, तथा सत्कार ए बे भाव शीतल परिसह ठे, अने शेष परिसह उष्ण ठे, इति परिसह विचार सपूर्ण ॥

गाथा २ए मीना टूटा शब्दना अर्थ.

खंती=क्षमा.
अज्जव=आर्यव
मद्दव=मार्दव
मुत्ती=मुक्ति.
तव=तप.
संजमे=संयम.
बोधवे=जाणवा
सच्च=सत्य.
सोअ=शौच.
आकिंचणं=अकिंचन.
बंभ=ब्रह्मचर्य
जइधम्मो=यतिधर्म

खंती मद्दव अज्जव, मुत्ती तव संजमे अ बोधवे ॥ सच्चं सोअ आकिं, चणं च बंभं च जइ धम्मो ॥ २ए ॥

शब्दार्थः-क्षमा, मार्दव, आर्जव, मुक्ति, तप, संयम, सत्य, शौच अकिंचन अने ब्रह्मचर्य ए दस प्रकारे यतिधर्म जाणवो.

विस्तारार्थ -क्रोधनो जे अभाव, ते पहेलो (खंती) एटले क्षमाधर्म माननो जे त्याग ते (मद्दव) एटले मार्दव धर्म, माया एटले कपट तेनो जे त्याग ते त्रीजो (अज्जव) एटले आर्यव धर्म, निर्लोभता ते चोथो (मुत्ती) एटले मुक्ति धर्म, पांचमो (तव) एटले तपो धर्म ते इच्छानो निरोध करवो प्राण-

तिपातादिक पाचनु जे विरमण, तथा पाच इंद्रि; योनो निग्रह, चार कषायनो जय, अने त्रण दंड- नी निवृत्ति ए सत्तर भेदे छठो (संजमे) एटले संयम धर्म सत्य बोलवु ते सातमो (सच्चं) एटले सत्य धर्म तथा हाथ पग प्रमुख जे शरीरना अवयवो पवित्र राखवा अने भात पाणी प्रमुख बेतालीश दोष रहित आहार लेवो, ते सर्व द्रव्यथी शौच अने आ- त्माना जे शुद्ध अध्यवसाय कषायादिके रहित शुद्ध परिणामनी वृद्धि ते भाव शौच, अथवा मन, वचन, अने कायाने शुद्ध राखवा, संयमने विषे निरतिचार- पणु तथा जीव अदत्त, स्वामी अदत्त, गुरु अदत्त, अने तीर्थंकर अदत्त, ए चार प्रकारनी चोरीनो त्याग करवो, ते आठमो (सोअ) एटले शौच धर्म सम- स्त परिग्रह त्याग रूप मुर्छा रहित थवु, ते नवमो (अकिंचण) एटले अकिंचन धर्म नव प्रकारे औ- दारिक, अने नव प्रकारे वैक्रिय सबधी मैथुननो त्याग करवो, ते दसमो (बंभ) एटले ब्रह्मचर्य धर्म एवी रीते (जइधम्मो) एटले यतिनो धर्म

ते उपर देखाडेला दस प्रकारनो (बोधवे) एटले जाणवो ए दश गुणे सहित होय, ते यति जाणवो. आ आर्यामां त्रण चकार छे, ते पाद पूर्णार्थ तथा उन्नयान्वयी अव्यय छे. ॥ २९ ॥

गाथा ३० मीना छूटा शब्दना अर्थ

पढम=प्रथम.	असुइत्त=अशुचित्व
अणिच्च=अनित्य	आसव=आश्रव.
असरण=अशरण.	संवरो=संवर.
संसारो=संसार	तह=तेमज.
एगया=एकत्व.	निज्जरा=निर्जरा
अन्नत्त=अन्यत्व	नवमी=नवमी

हवे बार भावनानु वर्णन करे छे –

पढम मणिच्च मसरणं, संसारो एगयाय अन्नत्तं ॥ असुइत्तं आसवसं, वरो अ तह नि ज्जरा नवमी ॥ ३० ॥

शब्दार्थः–पहेली अनित्य, बीजी असरण, त्रीजी संसार, चोथी एकत्व, पांचमी अन्यत्व, छठी असुचित्व, सातमी आश्रव, आठमी संवर, तेमज नवमी निर्जरा भावना जाणवी.

विस्तारार्थ.–(पढम) एटले प्रथम (अणिच्चं) एटले अनित्य नावना ते लक्ष्मी, यौवन, कुटुंब, परिवार, तथा आउखा प्रमुखने विषे जे अनित्यतानी नावना करवी, एटले संसारना सर्व पदार्थ ते कुशाग्रस्थ जल बिंदुनीपरे अनित्य अस्थिर जाणे

२ (असरण) एटले अशरण नावना

मरण समये चक्रवर्त्ती, इंद्र, अथवा तीर्थंकर प्रमुख गमे तेवो मोटो पुरुष होय, तेने पण धन कुटुंबादिक कोइनुं शरण मलतुं नथी, संसारमांहे जन्म, जरा, अने मरणना नयथी राखवाने एक धर्म विना बीजुं कोइ शरण नथी, एवी जे नावना करवी, ते

३ (संसारो) एटले संसार नावना

माता ते स्त्री थाय, स्त्री ते माता थाय, पिता ते पुत्र थाय, पुत्र ते पिता थाय, इत्यादिक आ जीवे संसारने विषे सर्व नावनो अनुनव कर्यो छे, एवी जे नावना करवी, ते.

४ (एगयार्य) एटले एकता नावना ते आ जीव संसारमां एकलो आव्यो ठे, एकलो जशे अने एकलो सुख तथा डुख नोगवशे. परंतु कोइ साथी थवानो नथी एवी जे नावना करवी ते.

५ (अणत्त) एटले अन्यत्व नावना ते आत्मा ज्ञान स्वरूप ठे, अने शरीर जम ठे माटे परस्पर निन्न ठे, आत्मा ते शरीर नथी ने शरीर ते आत्मा नथी, आत्माथी शरीर अन्य ठे, तेमज धन तथा स्वजनादिक पण अन्य ठे, एवी जे नावना करवी ते.

६ (असुइत्त) एटले अशुचित्व नावना ते रस, रुधिर, मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य परु तथा आंतरमा इत्यादिक अमेध्य वस्तुर्थी शरीर नरेलुं ठे अने जेना नव द्वारो सदा घरना खाळनी पेठे वहेतां रहे ठे. ए शरीर कोइ काले पण पवित्र होतुं नथी एवी नावना करवी ते

७ (आसव) एटले आश्रव नावना ते मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय तथा योग, ए पांच

प्रकारना आश्रवे करीने कर्म बधाय छे अथवा दया दानादिके करि शुभ कर्म बंधाय छे अने विषय कषायादिके करी अशुभ कर्म बधाय छे, एवी भावना करवी ते

ष (सवरो) एटले सवर भावना ते जे जे सवर थकी जे जे आश्रव रोकाय, ते ते आश्रवनु रोकवु, अने ते ते सवरनु जे आदरवु, एटले जेम क्षमादिक संवरवडे क्रोधादिक आश्रव रोकाय छे, इत्यादिक भावना करवी

ए (णिज्जरा) एटले निर्ज्जरा भावना ते (तह) एटले तेमज सकीर्ण स्थानकने योगे जेम आम्रफल पाके छे तेम बार प्रकारना तपे करीने कर्मने पचाववुं अर्थात् पूर्वे सचेला कर्मनु सारवु, ते रूप निर्ज्जरा, सकाम अने अकाम ए बे भेदे छे एवी भावना करवी आ गाथामा बे चकार छे ते पाद पूर्णार्थ तथा उभयान्वयी अव्यय छे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ मीना टूटा शब्दोना अर्थ.

लोगसहावो=लोक स्वभाव.	अरिहा=अरिहंतादिक.
बोही=बोधी.	एआओ=ए.
दुल्लहा=दुर्लभ.	भावणाओ=भावनाओ.
धम्मस्स=धर्मना.	भावेअव्वा=भाववी
साहगा=साधक	पयत्तेणं=प्रयत्ने करीने.

लोगसहावो बोही, दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा ॥ एआउ भावणाउ, भावेअव्वा पयत्तेणं ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ.-दसमी लोक स्वभाव, अग्यारमी बोधी दुर्लभ, बारमी धर्मना साधक अरिहंत मलवा दुर्लभ छे. ए भावना प्रयत्ने करीने भाववी

विस्तारार्थ.-दसमी (लोगसहावो) एटले लोकस्वभाव भावना ते केड उपर बे हाथ दइने तथा बन्ने पग पसारीने उभेला पुरुषना जेवो जेनो समआकार षट् द्रव्यात्मक छे, पूर्व पर्याय विणसे नवा पर्याय उत्पन्न थाय, अने द्रव्यपणे निश्चल होय, उत्पाद, व्यय, तथा ध्रौव्य स्वरूप चौद राजलोक छे. तेनु नीचेनुं

तलीयु उधा वालेला मल्लक (चपणीया) सरखु छे. तथा मध्य न्नाग फालर सरखो छे, अने उपरनो न्नाग मृदंग सरखो एवो शाश्वत छे इत्यादिक लोक स्वरूपनी न्नावना करवी अगियारमी (बोही एटले) बोधि डुर्लन्न न्नावना ते जीवने ससारमा न्नमतां अनता पुन्नल परावर्त्त थइ गया, तेमा अनतीवार चक्रवर्त्यादिक जेवी ऋद्धि प्राप्त थइ, तथा यथा प्रवृत्तिकरणने योगे करी अकाम निर्जरावके पुन्यना प्रयोगथी मनुष्य न्नव, आर्य देश, निरोगीपणु तथा धर्मश्रवणादिकनी प्राप्ती थइ, तथापि सम्यक्त्व प्राप्त थवु अति दुर्लन्न छे, एवी न्नावना करवी ते

अने जे दु खे करीने तरी शकाय एवा ससार समुद्रमाथी तारवाने वहाण समान ते श्री जिनेश्वर न्नगवाने कहेलो दस प्रकारनो जे क्षमादिक शुद्ध धर्म, तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ए रत्नत्रयात्मक धर्म, ते पामवो दुर्लन्न छे तथा ते धर्मना (साहगा) एटले साधक (अरिहा) एटले अरिहतादिक ते पण आ ससारने विषे पामवा (दुलहा) एटले

दुर्लन ठे एवुं जे चितववुं, ते बारमी (धम्मस्स) एटले धर्मनी जावना ए रीते सम्यग् दृष्टिये (पयत्तेण) एटले उद्यमे करीने (ए श्राउ) एटले ए कहेली (जावणाउ) एटले बार जावनाउ तेने प्रमाद-रहित थश्ने शुद्ध मने करी (जावे श्रव्वा) एटले जाववी,तथा पाच महाव्रत माहेली एकेका महाव्रतनी पांच पांच जावना मलीने पच्चीश जावना ठे ते पण एमां श्रतर्जाव ठे तथा मैत्री, प्रमोद, कारुण्य श्रने उपेक्षा ए चारनी साथे पूर्वोक्त बार जावना मेलविये ते वारे सोल जावना थाय ठे तेनो विचार उपाध्याय श्री विनविजयजीकृत शात सुधारस ग्रंथ थकी विस्तारे जाणवो ॥ ३१ ॥

गाथा ३२ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

सामाइ=सामायिक	बीश्र=बीजु.
श्रथ्य=श्रहीं श्रा	परिहारविसुध्धीश्र=परिहारविशुद्धि
पढम=पहेलु	सुहुम=सूक्ष्म.
ठेश्रोवठावण=ठेदोपस्थापनीय	तह=तेमज
जवे=ठे.	सपराय=सपराय

हवे पाच प्रकारना चारित्रनु वर्णन करे छे

समाइ अत्थपढमं, छेओवठावणं भवेबी-
अ ॥ परिहार विसुद्धीअं, सुहुमं तह संप-
रायं च ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ –अहिं पहेलु सामायक, बीजु छेदोपस्थापनीय, त्रीजु परिहारविशुध्धि अने तेमज चोथु सूक्ष्मसंपराय चारित्र.

विस्तारार्थ –आ उपर कहेला पाच चारित्रमा (अत्थ) एटले अहींआ (पढम) एटले पहेलु चारित्र (सामाइ) एटले सामायिक छे, तेनो अर्थ करे छे. सामायिक ए शब्द सम अने आयिक ए बे पदोनो बनेलो छे अहीं सम एटले रागद्वेष रहितपणाने माटे आय एटले गमन प्रयाण छे जिहा ते सम कहिये, ते ज्या उपन्यु ते सामायिक, वली सम ते ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र, तेनो आयिक जे लाभ ज्या थाय छे ए टले जेणे करी ज्ञान, दर्शन, तथा चारित्र, ए त्रणेनी प्राप्ति थाय छे, तेने सर्व सावद्ययोग त्यागरूप, अने नि-रवद्ययोग सेवनरूप सामायिक कहीये. श्रावकने

देश विरतिरूप सामायिक अने साधुने सर्व सावद्य विरतिरूप सामायिक होय, तेना वे भेद छे तेमां भरत ऐरवतादिक दश क्षेत्रने विषे पहेला तथा छेल्ला जिनना वारामां सर्व विरति सामायिकदंमकनो उच्चार करावे, ते इत्वरिक उठामण कर्यां सुधी जे रहे, ते इत्वरिक एटले स्वल्पकाल भावी सामायिक कहीये, अने वचला बावीस जिनोना वारामां तथा माहाविदेह क्षेत्रमां यावत्कथिक एटले सामायिक उच्चर्या पछी निरतिचारज पाले छे, तेथी तेने उठामण नहिं होवाने लीधे जाव जीव लगे रहे, माटे यावत्कथिक चारित्र कहीए. एने सम्यक् चारित्र पण कहे छे ए सामायिकचारित्र जीवने प्राप्त थया विना वीजां चारित्रोनो लाभ थाय नहि, माटे एने आदिमा कह्यु छे

(वीअ) एटले वीजु (छेउवठावणं) एटले छेदोपस्थापनीय चारित्र (भवे) एटले छे, ते पूर्वे कहेला सर्व विरति सामायिक चारित्रने ज छेदादि

विशेषपणे विशेषीये, तेवारे शब्दथी तथा अर्थथी नाना प्रकारपणु जजे, तेवारे छेदोपस्थापनीय चारित्र थाय तिहा छेद एटले पूर्व पर्यायनो छेद करवो. अने उपस्थापन एटले गणाधिपे आपेलु पच महाव्रत रूपपणु जे महाव्रतने विषे होय, ते छेदोपस्थापनीय कहिये, एटले ज्या नवा पर्यायोनु स्थापन करवु, तथा पच महाव्रतनो उच्चार करावववो ते पण बे भेदे एक सातिचार ते मूलगुण घातीने प्रायश्चित्त रूप अने बीजो निरतिचार. ते इत्वर सामायिकवंत नव दीक्षित शिष्यने छज्जीवणीया अध्ययन भणया पठी होय, तथा बीजो तीर्थ आश्रयी ते जेम श्री पार्श्वनाथना तीर्थथी वर्द्धमान स्वामीना तीर्थे आवी चार महाव्रत रूप धर्म त्यागीने पच महाव्रत रूप धर्म आदरे, तेने होय

३ (परिहार विसुद्धीअ) एटले परिहार विशुद्धि चारित्रना पर्याय कहीए छीए तिहां (परिहार) एटले तपो विशेष, तेणे करी विशुद्धि एटले कर्मनी निर्जरा,

जे चारित्रने विषे होय तेने परिहार वैशुद्धिक चारित्र कहीये, ते बे भेदे छे तेमा पहेलुं जे चार जण विवक्षित चारित्रना आसेवक ए कल्पमां प्रवर्त्तता होय तेनु चारित्र ते निर्विषमानसिक परिहार विशुद्धिक चारित्र जाणवुं, अने बीजुं जे चार जण तेना अनुचारी होय तेने निर्विष्टकायिक परिहार विशुद्धिक चारित्र जाणवु, ते आवी रीतः—नव जणानो गछ जूदो नीकले, ते तिर्थंकर पासे अथवा, पूर्वे जेणे तीर्थंकर पासेथी ए चारित्र पडिवज्यु होय, तेनी पासे ए चारित्र पडिवजे हवे ते नव साधुमा चार जण परिहारक एटले तपना करनारा थाय, ते निर्विषमानसिक जाणवा, अने चार तेना वैयावच्चना करनारा थाय, ते निर्विष्टकायिक जाणवा. तथा एकने वाचनाचार्य गुरुस्थानके ठरावे पछी ते चार परिहारक छ मास सुधि तप करे, तेमा ऊष्णकाले जघन्यथी चोथ मध्यमथी छठ्ठ अने उत्कृष्टथी अठ्ठम एवु तप करे,अने शीतकाले जघन्यथी छठ्ठ मध्यमथी अठम,अने उत्कृष्टथी दशम करे, तथा वर्षाकाले जघन्यथी अठ्ठम, मध्यमथी दशम, अने उत्कृष्टथी दुवालस तप करे, पारणे आंबील कल्प स्थितपणे नित्य करे एम छ म-

हिना तप करे, ते पठी फरी चार तपस्याना करनार, ते वैयावच्चीया थाय, अने वैयावच्च करनारा तपिया थाय, ते पण ठ मास लगे तप करे, ते पूर्ण थया पठी जे गुरु थया होय, ते ठ महिना तप करे, त्यारे ते आठ मांहेलो एक गुरु थाय, बाकीना वैयावच्चकरे एम अढार महिना सुधी तप संपूर्ण करी, पठी जिनकल्प आदरे, अथवा गछमा पण आवे. तप जे प्रथम संघयणी, पूर्वधर लब्धिवंत होय ते प्रचुर कर्मना परिपाकने अर्थे अंगीकार करे, ए चारित्र, पांच जरत, पांच ऐरवतमां पहेला अने ठेल्ला तीर्थंकरना तीर्थमा होय ए परिहार विशुद्धि चारित्रनो संक्षेपथी विचार कह्यो.

(तह) एटले तेमज चोथो (सुहुम) एटले सूक्ष्म ठे (संपराय) एटले कषाय ज्यां तेने सूक्ष्म संपराय चारित्र कहीये, ते उपशम श्रेणिये कर्म उपशमावता होय तिहां नवमा गुणठाणे लोजना संख्याता खंम करी तेने उपशम श्रेणिवालो जे होय ते उपशमावे अथवा क्षपक होय ते खपावे ते संख्याता खंम मांहेलो जेवारे ठेल्लो एक खंम रहे, तेना असंख्याता सूक्ष्म खंम करीने, दशमे गुणठाणे उपशमावे, अथवा क्षपक होय ते खपावे, ते दशमा

गुणठाणानुं नाम सूक्ष्मसंपराय, अने चारित्रनुं नाम पण सूक्ष्म संपराय जाणवुं ए चारित्र वे ज्ञेदे ठे, एक श्रेणि चढताने विशुद्ध मानसिक होय, वीजो उपशम श्रेणिथी पमताने सक्लिष्ट मानसिक जाणवुं. औपशमिकने ए चारित्र आखा संसारमां पांचवार अने एक ज्ञवमां वेवार आवे ॥ ३२ ॥

गाथा ३३ मीना बूटा शब्दना अर्थ

तत्तो=तेवार पठी	चरिऊण=आचरीने
अहरकाय=यथाख्यात	सुविहिआ=सुविहित साधु.
खाय=प्रसिद्ध	अयरामर=अजरामर
सव्वमि=समस्त	ठाण=स्थानकने
जीवलोगमि=जीवलोकने विषे	वच्चति=पामेछे
ज=जे	

तत्तोअ अहक्खाय, खायं सव्वंमि जीवलोगंमि ॥ जं चरिऊण सुविहिआ, वच्चंति अयरामरं ठाण ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ.—वली त्यारपठी सर्व लोकमां प्रसिद्ध एवु पांचमुं, यथाख्यात चारित्र ठे के, जे चारित्रने पाली सुविहित पुरुषो मोक्षस्थानने पामे ठे ॥ ३३ ॥

विस्तारार्थ —(तत्तो) एटले तेवार पठी पांचमुं (अह क्खाय) एटले यथाख्यात चारित्र, ते ज्यां (

एटले यथाविध करीने अकषायपणु अर्थात् ज्यां सं-ज्वलनादिके करी सर्वथारहितपणुं (रयात) एटले कहीये, ते यथाख्यात चारित्र जाणवु तेना बे भेद छे एक छद्मस्थिक अने बीजु कैवलिक, तिहां छद्म-स्थिक ते छद्मस्थ औपशमिकने अगीयारमे गुणठाणे होय, अने क्षपकने बारमे गुणठाणे होय, बीजो जे केवलीने तेरमे अने चउदसे गुणठाणे होय, ते कैव लिक जाणवु ए चारित्र (सव्वमि) एटले समस्त एवा (जीवलोगमि) एटले जीवलोकने विषे केवुं छे तो के (खाय) एटले प्रसिद्ध छे हवे ते केवी रीते प्रसिद्ध छे ते कहे छे (ज) एटले जे चारित्र प्रत्ये (चरिउण) एटले आचरीने (सुविहिआ) एटले सुविहित साधु ते (अयरामरठाण) एटले अजरा-मर स्थानक प्रत्ये (वच्चति) एटले पामे छे, एटले जन्म, जरा अने मरण तेणे रहित एवु जे मोक्षरूप स्थानक, ते प्रत्ये पामे छे ॥ ३३ ॥

इतिश्री नवतत्त्व विचार समाप्त. ॥६॥

गाथा ३४ मीना छूटा शब्दना अर्थ

वारस=बार.
विह=प्रकारे.
तवो=तप
निज्जरा य=निर्जरा
बंधो=बंधतत्त्व -
चउ=चार
विगप्पो=विकल्पो.
पयई=प्रकृति.

ठिइ=स्थिति | ज्ञेएहिं=ज्ञेदवडे.
अणुजाग=अनुजागरस. | नायव्वो=जाणवो.
पएस-प्रदेश

अथ निर्जरातत्त्व विचारः प्रारज्यते ॥

बारसविहं तवो नि,ज्जराय वंधो चउ विग-प्पो अ॥ पयई ठिइ अणुजाग, पएस ज्ञेएहिं नायव्वो ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ.-आ उपर कहेलो बार प्रकारनो तप ते निर्जरा जाणवो. अने बंध ते चार प्रकारनो छे, ते प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुजागबंध अने प्रदेशबंध एवा ज्ञेदोए करीने जाणवो ॥ ३४ ॥

विस्तारार्थ.-गाथाना पूर्वार्द्धमाना एकएक वाक्येकरी निर्जरातत्त्वनु वर्णन करे छे.

निर्जराना बे प्रकार छे एक डव्य निर्जरा, बीजी ज्ञाव निर्जरा, तथा सकाम अने अकाम एवा बे ज्ञेदे पण निर्जरा छे, ते कहे छे -

डव्यनिर्जरा एटलेपुद्गलकर्मनु सारुवुअनेआत्माना शुद्ध परिणामे करी कर्मनी स्थिति जे पोतानीमेलेपाके. अथवा बार प्रकारना तपेकरी नीरस कर्या एवा जे कर्म परमाणुतेजेनाथीखरे,एवाजे आत्माना परिणाम थाय तेज्ञावनिर्जराजाणवी तथा तिर्यंचादिकनी पेठेइच्छावि-

ना कष्ट सहनकरताकर्मपुजलनुजेक्षपन थायछे, तेने द्रव्यनिर्झराअथवाअकामनिर्झराकहीये,अनेसयमीथकां वार प्रकारना तपे करी कष्ट सहन कर्या थकी जे कर्म परमाणुउंनु क्षपण करवु अथवा साम्बुं,तेने ज्ञाव निर्झरा अथवा सकामनिर्झरा कहीये, ए बे निर्जरामां ज्ञावनिर्जरा अथवा सकामनिर्जरा श्रेष्ट छे, ते (णिज्जराय) एटले निर्जरातत्त्व (बारसविह) एटले बार प्रकारना (तवो) एटले तप, तेना ज्ञेदेकरी कह्यु छे एटले अनादि सबध सर्व कर्मोनु परिशाटन बार प्रकारना तप कर्याथी थाय छे, तेनेज सातमु निर्जरा तत्त्व कहे छे अथवा (बारस विहतवोणिज्जराय) एटले बार प्रकारनो तप जे आगली गाथाये कहेशे, ते तप, निर्झराने अर्थे छे

हवे गाथाना पूर्वार्द्धमाना "बधो" ए शब्दथी बधतत्त्वनो आरज्ञ थाय छे, (बधो) एटले बधतत्त्व एटले कर्मनु बांधवु ते (चउविगप्पो) एटले चार ज्ञेदे छे, ते आ प्रमाणे —

१ (पयई) एटले प्रकृतिबंध ते कर्मनुं स्वज्ञाव परिणमन रूप छे

२ (ठिइ) एटले स्थिति एटले स्थितिबंध,ते क-

र्मनुं कालपरिमाण रूप ठे.

३ (अणुन्नाग) एटले अनुन्नागबंध, ते कर्मनुं तीव्र मंदादि रसपरिमाणरूप ठे

४ (पएस) एटले प्रदेश एटले प्रदेशबंध ते कर्म पुदगलना प्रदेश परिमाणरूप ठे. ए चार (न्नेएहिं) एटले न्नेदोए करीने बंधतत्वने सम्यक्दृष्टि जीवे (नायव्वो) एटले जाणवो ॥ ३४ ॥

गाथा ३५ मीना बुटा शब्दना अर्थ.

अणसण=अनशन	सलिणया=सलिनता
ऊणोअरिया=ऊणोदरिका.	बज्जो=बाह्य.
वित्तीसंखेवण=वृत्तिसंक्षेप	तवो=तप.
रसच्चाओ=रसत्याग	होई=ठे.
कायकिलेसो=कायक्लेश	

अणसण मूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाउ ॥ कायकिलेसो सलि, णआय बज्जो तवो होई ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ.=अनशन, उनोदरिका, वृत्तिसंक्षेप, रसत्याग, कायक्लेश, अने सलीनता ए ठ प्रकारे बाह्य तप होय ठे

विस्तारार्थः-पहेलु (अणसण) एटले अनशन तप ते आहारनुं त्याग करवुं, तेना बे न्नेद ठे.-एक इत्व

अने बीजो यावत्कथिक. तिहां छेल्ला तीर्थंकरने वारे छठ, अठमादिकथी मांडीने छमासी पर्यंत, अनेक विधिये जे नियमयुक्त अनशननो त्याग करवो, ते इत्वर अनशन कहीये

अने यावत्कथिक ते जावजीव अनशन ग्रहणरूप तेना बे भेद छे –

एक पादोपगम, बीजु भत्त पच्चक्खाण ए बन्नेना वली निहारिम अने अनिहारिम, ए बे बे भेद छे, तिहा अनशन कीधा पछी शरीरने बाहिर काढवु पडे, ते निहारिम अने अनशन कीधा पछी तेहिज स्थानके रहेवु, परतु शरीरने त्याथी बहार काढवुं न पडे, गुफादिक माहिज राखवु पडे, ते अनिहारिम.

बीजु (उणोअरिआ) एटले उणोदरिका तप ते अशन प्रमुखनी न्यूनता करवी, तेना बे भेद छे एक द्रव्यथी, बीजु भावथी, तेमाना द्रव्य उणोदरिना बे भेद छे एक उपकरणनी न्यूनता करवी बीजु भात पाणीनी न्यूनता करवी तथा भावथी उणोदरी ते रागादिक क्रोधादिक अल्प करवा, एटले तेउनी न्यूनता करवी

त्रीजु (वित्तीसखेवण) एटले वृत्ती सक्षेप तप तेना

र न्नेद ठे. एक डव्यथी, वीजु क्षेत्रथी, त्रीजु का-
थी, अने चोथु न्नावथी. ए चार प्रकारे वृत्ति एटले
ाजीविका तेनो संक्षेप करवो, एटले अन्निग्रह क-
वा नियमादिक धारवा.

चोथुं (रसच्चाउ) एटले रस त्याग ते नीवी तथा
ांवीलप्रमुखनुंकरवु, विगयादिक रसनोत्याग करवो.

पांचमुं (कायकिलेसो) एटले कायक्लेश तप ते
लोचादिक कष्टनु सहन करवु, कायोत्सर्ग करवो,तथा
उत्कटादिक आसननुं करवुं

ठ्वु (संलीणया) एटले सलीनता तप ते अंगो-
पांगादिकनु सवरवु, गोपन करवुं तेना चार न्नेद ठे.
पहेलुं इंडिय सलीनता, वीजु कषाय सलीनता, त्री-
जु योग सलीनता अने चोथुं विविक्त चर्या सलीनता,
एटले एकांत वस्तीये रहेवु ए रीते ठ प्रकारनो वाह्य
तप, ते सर्वथी तथा देशथी एवा वे न्नेदे जाणवुं जे
कष्टने मिथ्यात्वीयो पण तप करी मानेठे, जेने लोक
पण देखी शके ठे, जेथी कष्ट घणु ने लान्न अल्प थाय,
अने वाह्य शरीरने तपावे, तेथी ए ठ प्रकारनो (वज्जो)
एटले वाह्य (तवो) एटले तप (होइ) एटले ठे.

गाथा ३६ मीना छूटा शब्दोना अर्थ.

पायछित्त-प्रायश्चित	झाणं-ध्यान.
विणओ-विनय	उस्सग्गोविअ-कायोत्सर्ग.
वेयावच्च-वैयावृत्य	अभ्भिंतरओ-अभ्यंतर
तहेव-तेमज.	तवो-तप.
सज्झाओ-स्वाध्याय	होई-छे

छ प्रकारना अभ्यंतर तपनु कथन करे छे

पायछित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ॥ झाणं उस्सग्गोविअ, अभ्भिंतरओ तवो होई ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ -प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, तेमज स्वाध्याय, ध्यान अने कायोत्सर्ग ए अभ्यंतर तप होय छे ॥ ३६ ॥

विस्तारार्थ- पहेलु (पायछित्त) एटले प्रायश्चित तप ते करेला अपराधनी शुद्धि करवी, कोइ लागेला दोषने गुरु आगल कपटरहितपणे प्रकाश करी तेनी गुरु पासे आलोयणा लेवी तेना दस भेद छे मात्र गुरुनी आगल पोताना करेला अपराधनु कथन करवु, तथा गोचरी प्रमुखनु जे आलोचवु ते

१ आलोचन प्रायश्चित पूज्या विना मातरुं प्रमुख परठववाथी मिछामि दुक्कड देवु ते

२ प्रतिक्रमण प्रायश्चित. शब्दादिक विषय उपर रागादिक कर्याथी तेनुं आलोचन करवुं, अने बीजुं मिच्छामि डुक्कड पण देवुं, एटले बन्नेवानां करवां ते.

३ मिश्रप्रायश्चित अशुद्ध ज्ञात पाणी प्रमुखनो त्याग करवो ते

४ विवेक प्रायश्चित

५ कायोत्सर्ग प्रायश्चित ते कुस्वप्न दीठाथी कायोत्सर्ग करवो

६ तप प्रायश्चित्त ते पृथ्वीकाय प्रमुखनो सघट थवाथी नीवी प्रमुख जे ठ मासी पर्यंत तप करवो

७ छेद प्रायश्चित्त ते पृथिवि आदिकनो सघट थवाथी कांइक दीक्षा पर्यायनी न्युनता थइ होय, ते अपराधनु निवारण करवा माटे जे दुर्दम तप करवोते.

८ मुल प्रायश्चित ते मूल गुण भग थवाथी सर्वथा व्रत पर्यायनुं छेदन थवाथी फरी जे महाव्रत लेवांते.

९ अनवस्थाप्य प्रायश्चित ते अति संक्लिष्ट परिणामे करी कोइनो घात पात थई गयो होय, तो सूत्रोमां कहेला विधि प्रमाणे तप करवो अने त्यार पछी फरी महाव्रतनो जे आरोप करवो ते

१० पारांचित्त प्रायश्चित एटले

राजानी राणी प्रमुख स्त्रीने विषे संजोग थयाथी बार वर्ष पर्यंत क्रिया सहित अने लिंगादिक भेदे रहित तीर्थ प्रभावना करी, फरी दीक्षा लइ गच्छमा आववु ते

बीजु (विणउ) एटले विनय तप ते गुणवतादिकनी भक्ति करवी, तथा अशातना टालवी, इत्यादिक एना सात भेद छे तेमा प्रथम ज्ञाननो विनय, पाच भेदे छे

१ भक्ति विनय ते मत्यादि पाच प्रकारना ज्ञाननी बाह्यथी सेवा करवी ते

२ बहु मान विनय ते पाचे ज्ञाननु अतरग प्रीति सहित बहुमान करवु ते

३ भावना विनय एटले पाचे ज्ञाने करी दीठेला जाणेला पदार्थोनी सम्यक् प्रकारे जे अनुभवथी भावना करवी ते

४ विधि ग्रहण विनय ते पाचे ज्ञाननु विधिये करी ग्रहण करवु ते

५ अभ्यास विनय ते पाचे ज्ञाननो जे अभ्यास करवो ते

बीजो दर्शननो विनय बे प्रकारे छे उचित क्रि-

यानुं साचववुं ते पहेलो शुश्रूषा विनय अनुचित क्रियाथी निवृत्तवुं ते अथवा आशातना करवी नहीं ते, बीजो अनाशातना विनय एवी रीते दर्शननो विनय बे प्रकारे छे ए बे प्रकारनो विनय कोने विषे करवो ते कहे छे जे साधु अथवा साधर्मी पोताथी दर्शन गुणे करी अधिक होय, तेने विषे शुश्रूषा विनय करवो ते शुश्रूषानुं स्वरूप दश प्रकारे छे ते कहे छे

१ सत्कार एटले स्तवन तथा वंदनादिक करवां,

२ अभ्युत्थान एटले आसनथी उठवुं,

३ सन्मान एटले वस्त्र तथा पात्रादिके करी पूजा करवी

४ आसन परिग्रहण एटले अति आदरे करी आसन लावी आपीने स्वामी आ आसन उपर बेसो, एम मुखथी कहेवुं

५ आसनानु प्रदान एटले मुखे कहेवु एटलुंज नहीं पण ते प्रमाणे आसन देवु.

६ कृतिकर्म एटले वंदना करवी, ए साधु प्रमुखनी अपेक्षाये जाणवु.

७ अंजली ग्रहण एटले हाथ जोडवा.

८ आवतानी सामे जवु

९ वेठेलानी (पर्युपासना) एटले सेवा करवी,

१० जनाराने वोलाववा जवु

हवे वीजो अनाशातना विनय तेना पिस्तालीश भेद छे, ते कहे छे –

१ ऋषभादिक चोवीश तीर्थंकर,

२ जिनप्ररूपित धर्म,

३ धर्माचार्य अथवा प्रव्रजाचार्य

४ व्याख्यानकरनार,तथावाचनानाआपनारवाचक.

५ वय, पर्याय तथा श्रुत, ए त्रण प्रकारना थिविर.

६ कुल, ते चान्द्रादिक एक आचार्यनी संतति,

७ गण, ते पोतपोतामा सापेक्ष कुलनो समुदाय कोटिकादिक

८ सघ, ते ज्ञानादिक गुण सहित साधु समुदाय, अथवा गण समुदायरूप तेने विषे

९ साम्भोगिक, ते एक माफलीमा जे साथे व्यवहार होय ते

१० क्रियामा जे पोताना सरखी क्रियावाला होय ते एमनी साथे मति ज्ञानादिक पाच ज्ञान मेलवतां पदर थया तेने विषे १ आशातनानो त्याग

करवो, २ ज्ञक्ति सहित बहु मान करवुं, ३ ठता गु-णवर्णवीने यश कीर्ति दीपाववी ए रीते पूर्वोक्त पंदरने ए त्रणे गुणता अनाशातना विनयना पिस्ता-लीश ज्ञेद थाय ठे

त्रीजो चारित्रनो विनय, पांच ज्ञेदे ठे, ते कहे ठे.–सामायिक प्रमुख पाच चारित्रोनी सद्दहणा कर-वी, तेमज कायाये करी फरसवुं, आदरवु, पालवुं. तेमज ज्ञव्य प्राणीनी आगल प्ररूपणा करवी.

त्रण प्रकारना योगनो विनय कहे ठे.- आचार्या-दिकोनो सर्व कालने विषे मन, वचन, तथा कायाये करी विनय करवो एटले मने करी मातु चिंतववुं नहीं, वचने करी मातु बोलवु नहीं, तथा कायाये करी माठी प्रवृत्ति करवी नहीं तेवी रीतेज ते आ-चार्यादिकने विषे मन, वचन अने कायाने शुज्ञ प्र-वृत्तिनां उदीरवा प्रवर्त्तांववा ए रीते त्रण प्रकारे यो-गनो विनय ते पूर्वोक्त त्रण विनयनी साथे ज्ञेलवतां ठ ज्ञेद विनयना थया.

सातमो लोकोपचार विनय सात ज्ञेदे ठे. ते कहेठे.
१ गुरु, प्रमुख जे श्रेष्ठ पुरुष होय तेउनी स-मीपे वसवु.

२ आराधवा योग्य पुरुषनी इछाये प्रवर्त्तवुं

३ पोतानी उपर उपकार करे, तेनी उपर पाछो प्रत्युपकार करवो, एटले गुरुने जो हु विनये करी प्रसन्न करीश, तो ते मने शास्त्रदान देशे, एवा अभिप्राये करी गुरुने जातपाणी प्रमुख लावी देवु

४ तेमज ज्ञानादिक जे कार्य तेनु कारण जे जातपाणी प्रमुख, तेनु करवु एटले देवु

५ तथा दुःखे करी पीमाएला जे ग्लानी तेनी औषधादिके करी गवेषणा करवी

६ तेमज देश अने कालने जाणवा जे अवसरे जे उचित होय ते अवसरे ते करवुं

७ वमिलो सवधि सर्व कार्योने विषे अनुकूलपणुं एटले तेमना कार्य करवामा उजमालपणुं राखवु इतिभाव एवी रीते लोकोपचार विनय सात प्रकारे छे एम विनयना सात भेदे करी बीजो विनय तप जाणवु जो के विनय तो एकज छे, तोपण ज्ञान दर्शन, चारित्र, मन, वचन काया अने लोकोपचार, ए सात विषये करी विनय करीये, तेथी ए बीजो विनय तप पण सात प्रकारनो कह्यो छे.

त्रीजु (वेयावच्च) एटले वैयावृत्य तप ते जात

पाणी प्रमुख मेलवी आपवारूप उपष्टन्न देय, ते दश प्रकारना छे यथा – आयरिय उवज्झाए, थेर तवस्सी गिलाण सेहाण ॥ साहम्मी कुल गण संघ, वेयावच्चं हवइ दसहा ॥२॥ आचार्य ते जेनी पासेथी धर्म प्राप्त थाय छे ते. उपाध्याय, ते जे विद्याअभ्यास करावे छे ते, स्थविर, ते ज्ञान, पर्याय, तथा वय, ए त्रण प्रकारे तपस्वी, ते अठम प्रमुख तप करनार होय ते. गिलाण ते ग्लान एटले रोगी होय ते सेहाण, ते शिष्य नवी दीक्षा लीधेला होय साहम्मी, ते समान धर्मवान् होय ते कुल, ते चंद्रादिक कुलवान् होय ते गण, ते कोटिक प्रमुख. संघ ते समुदायरूप होय ते एवी रीते ए दशनी अशन, पान, वस्त्र, पात्र, तथा औषध प्रमुखे करी यथायोग्य सेवा करवी तेने त्रीजो वैयावृत्य तप कहे छे.

(तहेव) एटले तेमज चोथु (सज्झाउ) एटले स्वाध्याय ए नामनु तप, ते पांच भेदे छे यथा "वायणा पुछणा चेव, तहाय परिअट्टणा, अणुप्पेहा धम्म कहा, सज्झाउ होइ पंचहा" (वायणा) एटले वाचना ते पोते भणवु, शिष्यादिकने भणाववु, तथा वांचवु. (पृछना) ते जे सूत्रार्थमा संदेह पडयाथी गुरु आ

दिकने पूछवु, ते (तहाय) एटले तेवी रीते ज (परिअट्टणा) एटले परिवर्त्तना, ते पूर्वे शीखेलो जे अर्थ तेने फरी संभारवो ते (अनुप्रेक्षा) ते पूर्वे धारेला अर्थनु चिंतवन करवु ते (धम्मकहा) एटले धर्मसंबंधी कथा कहेवी अथवा धर्मनो उपदेश करवो ए प्रकारे स्वाध्याय तप पांच भेदे थाय छे, ते कह्यो

पांचमु (झाण) एटले ध्यान ते मननु एकाग्रतायें अवलंबन ते ध्यान तप, ते चार भेदे छे

तेमा पहेलु आर्त्तध्यान तेना चार भेद छे –

भ्राता, मित्र, स्वजन, माता, पिता, सुहृद्, भृत्य,तथा पशु प्रमुख जे पोताने इष्ट एटले अति प्रिय होय,तेमनो तथा शातावेदनीय, तेओनो वियोग थवाथी जे चिंता, शोक,अथवा विलाप करवो,ते पहेलु इष्टवियोग आर्त्तध्यान मनने अणगमता जे विषय, अने तेना आधारभूत जे गधेडा कोढीआप्रमुखअशुभनो संयोग थवाथी तेओने विषे द्वेष करी, जे वियोगनु चिंतवन करवुं ते बीजु अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान शरीरने विषे कोइ रोगनी उत्पत्ति थयाथी तेना संबंधी जे चिंतादिकनुं करवु, ते त्रीजु रोगचिंता आर्त्तध्यान अमुक समयआव्याथी हु आकार्यकरीश इत्यादिकभविष्यकालनीजे शोचना

करवी, तथा दान, शील, तप प्रमुखे करीने पछीतेना फळनी जे इच्छा करवी, अथवा आ जवने विषे में एवो उग्रतप कर्यो छे, माटे आवता जवमां मने अमुक वस्तु मळजो एवु जे नियाणु बांधवु, ते चोथु अग्रशौच आर्त्तध्यान कहीये

बीजा रौद्र ध्यानना चार जेद छे.—

द्वेषे करी प्राणीने मारवानी अथवा बंधनादिक करवानी जे चिंतवना करवी, ते पहेलु हिंसानुबंधी रौद्र ध्यान. पैशून्यादिक असत्य असद्भूत वचन बोलवाना तथा ठगादिक करवाना जे अध्यवसाय, ते बीजुं मृषानुबंधी रौद्रध्यान क्रोध तथा लोजादिकने वश थइने बीजानु द्रव्य हरण करवानी जे चिंतवना करवी, ते त्रीजु स्तेयानुबंधी रौद्रध्यान ते शब्दादिक विषयनु सौंधनजूत जे धन, तेना रक्षण करवाने अर्थे सर्व संबंधीयोने विषे जे दुष्ट चिंतवन करवु ते, जेमके जो आ सर्व जीवता हशे, तो मारुं धन लइ लेशे माटे जो ते मरी जाय, तो सारुं थाय एवी जे दुष्ट चिंतवना करवी, ते चोथुं संरक्षणानुबंधी रौद्रध्यान कहीये ए आर्त्त अने रौद्र बेहु ध्यान संसार संबंध फळनां देनारछे

त्रीजा धर्मध्यानना चार ज्नेद छे –

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तथा वैराग्य ज्नावनायेकरी वीतरागना वचन उपर जे सद्दहणा, एटले श्रद्धान राखवु, आपणी मति तुछ छे पण केवली ज्नापित सर्व सत्यज छे, एवी जे चिंतवना करवी, ते पहेलु आज्ञाविचय धर्मध्यान राग द्वेषादिक जे आश्रव छे, ते इहलोक परलोकने विषे अपाय ज्नूत एटले अनर्थरूप छे, एवी जे चिंतवना करवी, ते बीजु अपायविचय धर्मध्यान सुख दुखादिकनो विपाक आवो प्राप्त थयाथी तेनो हर्ष शोक न करता तेने मात्र पूर्वकृत कर्मनु फल जाणवु, ते त्रीजु विपाक विचय धर्मध्यान चोथु सस्थान विचय धर्मध्यान ते जिनोक्त षड्द्रव्यना लक्षण सस्थानादिकनी जे चितवना करवी ते

चोथा शुक्लध्यानना चार ज्नेद छे–प्रत्येक द्रव्यने विषे उत्पादि पर्यायना ज्नेदपणानु चितवन करवुं, शब्दथी शब्दातरे तथा अर्थथी अर्थातरे अने द्रव्यथी द्रव्यातरे सक्रमण करवु, तथा एक योगथी बीजा योगने विषे एटले मनोयोगथी वचनयोगने

विषे, वचनयोगथी काययोगने विषे संक्रमण करवुं, इत्यादिक ते पहेलुं पृथक्त्व वितर्क सविचार शुक्लध्यान ए ध्यान क्षायिक श्रुत पाठीने त्रणे योग छतां थाय छे ए प्रथम भेद.

२ उत्पादादिक एक पर्याये करी निर्वात स्थानकना दीपकनी पेठे निष्प्रकप चित्तवान् थइने पूर्वलाथी विपरीत रहेलुं, ते बीजुं एकत्व पृथक्त्वम् विचार शुक्लध्यान ए ध्यान गमे ते एक योग थकां थाय छे. आ बे ध्यान, यद्यपि पूर्वगत श्रुतावलंबीने होय छे, तथापि मरुदेव्यादिकने श्रुत विना पण थयां हता, ए विशेषता छे.

३ तेरमा गुणठाणाने अंते मनोयोग, तथा वचनयोग रुध्या पछी काययोग रुंधता होय, ते त्रीजुं सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति नामे शुक्लध्यान, आ ध्यान, एकला मात्र काययोगेज थाय छे

४ शैलेशी गुणठाणे गये थके क्रिया विछेद थइने जे पाछु परूवु नहीं, ते चोथु व्युछिन्न क्रिया अप्रतिपाति शुक्लध्यान कहीये, ए ध्यान योगना अभावे थाय छे पूर्व प्रयोगवडे ध्यानपणु थाय छे, जेम दंड-

वके चक्र फेरवीने ते दम काढी लीधा पछी पण पूर्वना प्रयोगथी चक्र फरतुज रहे छे, तेम जाणवु ए चार ध्यान कह्या, पण अन्यतर तपमा मात्र धर्मध्यान अने शुक्लध्यान, ए बे उपयोगी छे, केमके ए बे मोक्षना कारण भूत छे ए पाचमो ध्यान तप थयो

छवु (उस्सग्गोविअ) एटले कायोत्सर्ग तप पण द्रव्यथी तथा भावथी बे भेदे छे तेमा द्रव्योत्सर्गना चार भेद छे, अने भावोत्सर्गना त्रण भेद छे तिहा प्रथम द्रव्योत्सर्ग कहे छे

१ गछनो त्याग करी जिन कल्पादिक जे आदरवो, ते पहेलो गणोत्सर्ग, २ अणसणादिक व्रत लइने शरीरनो जे त्याग करवो, ते बीजो देहोत्सर्ग ३ कल्पविशेषे उपधिनो जे त्याग करवो, ते त्रीजो उपध्युत्सर्ग, ४ अधिक अशनादिक लेवानो त्याग करवो तथा अशुद्धमान भातपाणी एटले अशनादिक चारने लेवानो जे त्याग करवो, ते चोथो अशुद्ध भत्त पाण उत्सर्ग ए चार प्रकारे द्रव्यथी उत्सर्ग जाणवो उत्सर्ग एटले त्याग करवो, ए अर्थ समजवो

हवे भावोत्सर्गना त्रण भेद कहे छे

१ क्रोधादिक चारनो जे त्याग करवो, ते पहेलो कषायोत्सर्ग. २ नरकादिकना ज्ञवनुं आउखुं बांधवाना कारण, जे मिथ्यात्वादिक ठे, तेनो जे त्याग, ते बीजो ज्ञवोत्सर्ग अर्थात् ससारोत्सर्ग ३ बधना हेतु जे ज्ञानावरणीयादिक कर्म ज्ञान प्रत्यनिकपणादिक ठे तेनो जे त्याग, ते त्रीजो कर्म उत्सर्ग कहीये ए ज्ञावथी उत्सर्ग त्रण ज्ञेदे कह्यो, एथी कर्मनी निर्जरा थाय ठे ए रीते ठ प्रकारे (अप्रितरठतत्रो) एटले अन्यतर तप (होई) एटले ठे ए ठ ज्ञेदने सम्यग् दृष्टि जीव, तप करी माने एम ए बार प्रकारना तपे करी निर्जरा तत्त्व कह्यु. ॥ ३६ ॥

इति श्री निर्जरा तत्त्व

गाथा ३७ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

पयइ=प्रकृति.	अणुज्ञागो=अनुज्ञाग
सहावो=स्वज्ञाव	रसो=रस
वुत्तो=कह्यो ठे	नेओ=जाणवो
ठिइ=स्थिति	पएसो=प्रदेश
कालावहारण=कालनु अव धारण.	दल=दल.
	सचओ=पचय.

पयइ सहावो वुत्तो, ठिई कालावहारण
अणुन्नागो रसो नेउ, पएसो दल सचउ।३७।

पूर्वे कही गएला बंध तत्त्वना ४ नेदनुं
वर्णन चाले छे

शब्दार्थ.-प्रकृति बंध ते स्वन्नाव, स्थितिन्नाव ते कालनो निश्चय, अनुन्नाग बंध ते रसजाणवो अने प्रदेश बंध ते दल समूह जाणवो

विस्तारार्थ.-अहीयां पूर्वोक्त चार प्रकारनो जे बंध ते मोदकने दृष्टांते जाणवो जो सूठ प्रमुख वस्तु नांखीने मोदक कर्यो होय तो ते वायुरोगने मटाडे छे, जीरु प्रमुख नाखी मोदक कर्यो होय, ते पित्तरोगनु हरण करे छे, आ प्रमाणे जे जे द्रव्यना संयोगथी मोदक बन्यो होय ते मोदक, द्रव्य गुणानुसारे वात, पित्त, तथा कफादिक रोगोनु हरण करे छे, ते तेनो स्वन्नाव जाणवो तेम ज्ञानावरणीय कर्मनो ज्ञान अपहारक स्वन्नाव छे दर्शनावरणीय कर्मनो स्वन्नाव सामान्य योगरूप जे दर्शन, तेने नाश करवानो छे वेदनीय कर्मनो स्वन्नाव अनंत अव्याबाध सुखने टालवानो छे मोहनीय कर्मनो स्वन्नाव सम्यक्त्व तथा चारित्रने टालवानोछे आयु कर्मनोस्वन्नावअक्षय स्थि-

तिने टालवानो छे नाम कर्मनो स्वन्नाव शुद्ध अवगाहनाने टालवानो छे गोत्र कर्मनो स्वन्नाव आत्माना अगुरु लघु गुणने टालवानो छे अने अनतदान, अनत लान्न, अनंत न्नोग, अनंत उपन्नोग, अनत वीर्य, तेने टालवानो अंतराय कर्मनो स्वन्नाव छे.

तेम इहां प्रथम (पयइ) एटले प्रकृति वध ते कर्मना (सहावो के०) स्वन्नावने (वुत्तो) एटले कह्यो छे.

२ स्थिति एटले मोदक प्रमुख वस्तुनुं पक्ष, मास, वे मास, त्रण मास, तथा चार मास रहेवानु कालमान होय ते. तेम कोइ कर्म पण जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त स्थिति रहे, अने उत्कृष्टताये सित्तेर कोमा कोमी सागरोपम प्रमाणे स्थिति रहे, ते स्थितिनी वचमां जे कर्म जेटली रहेवानी स्थितिए बांध्यु होय ते कर्म तेटलो वखत रहे, तेने (कालावहारण)कालनुं अवधारण एटले कालनो निश्चय करवारूप (ठिइ) एटले स्थितिवध कहीये.

३ जेम कोइ मोदक मीठो, कमवो, तीखो होय छे, वली कोइ मोदकनो एक ठाणीयो, वे ठाणीयो रस होय छे, इत्यादि अनेक प्रकारे अल्प विशेपत्व होयछे,